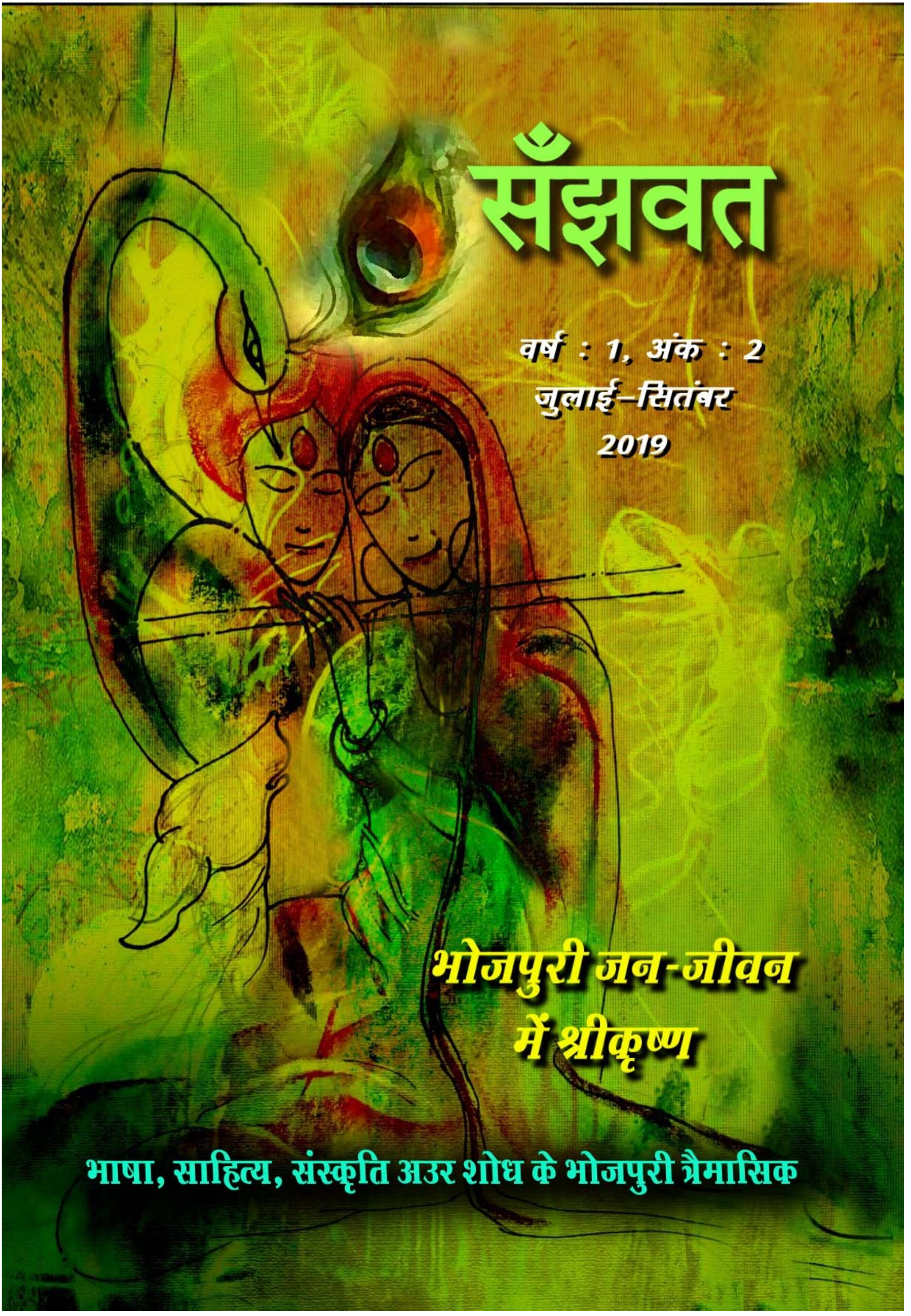

सँझवत

वर्ष : 1, अंक : 2
जुलाई–सितंबर
2019

भोजपुरी जन-जीवन में श्रीकृष्ण

भाषा, साहित्य, संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

परामर्श मंडल

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

डॉ. नर्वदेश्वर राय

डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

डॉ. अरुणमोहन ‘भारवि’

डॉ. नीरज सिंह

डॉ. जयकांत सिंह ‘जय’

संपादक व प्रकाशक

सीमा मिश्र

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति,अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

जुलाई-सितंबर, 2019, वर्ष-1, अंक-2

संपादक व प्रकाशक

सीमा मिश्र

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

(अवैतनिक)

संपर्क : 9831649817 (साँझि 6 बजे से 9 बजे तक)

संपादन व प्रकाशन स्थल- 3 नं. लिंक रोड, उत्तरायन, नॉर्थ 24 परगना (प.बं.)

संपादकीय संपर्क (पत्राचार) :

सीमा मिश्र, 2/6, पार्वती कंप्लेक्स, प्रथम तल, पार्वती नगर, जी.पी.रोड,

पोस्ट- बंगाल एनमेल, जिला- नॉर्थ 24 परगना (प.बं.) पिन- 743122

ई मेल : sampadaksanjhavat@gmail.com

वार्षिक शुल्क (पत्रिका रजिस्टर्ड डाक से प्रेष्य) : ₹ 240/-

एह अंक के कीमत : चालीस रुपया (रजि. डाक से- साठ रुपया)

एह अंक के आवरण सज्जा : श्री पंकज तिवारी

विशेष प्रतिनिधि :

दिल्ली- श्री केशव मोहन पांडेय

पटना- श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी

आरा- श्री कृष्ण कुमार

बक्सर- डॉ. अरुणमोहन ‘भारवि’

मुजफ्फरपुर- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

प्रकाशित रचनन का विचारन से पत्रिका-परिवार के सहमति जरूरी नइखे। अपना रचना खातिर लेखक खुदे जिम्मेदार होइहें। विवाद का स्थिति में न्यायक्षेत्र पटना होई।

स्वत्वाधिकारी सीमा मिश्र द्वारा कंपोज्ड,संपादित आ प्रकाशित। **अव्यावसायिक प्रकाशन।**

विषय-क्रम

संपादकीय

भोजपुरी के गँवारू भाषा जनि बनाईं /5

लेख

2.अनिरुद्ध : कुदरत आ मनुजता के पक्षधर गीतकार- भगवती प्रसाद द्विवेदी/9

3.भोजपुरी जन-जीवन में श्रीकृष्ण- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र/15

4.भोजपुरी गजल : जाने आ माने के कुछ बिन्दु- सौरभ पाण्डेय/39

5.सइयाँ, सजना ,बलमा- मार्कण्डेय शारदेय/36

6.भादो के दू गो सांस्कृतिक परब- बहुरा आ तीज- डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल/55

साक्षात्कार

7.फायदा होई त बदलाव अइबे करी- नारायण दुबे/21

(श्री नारायण दुबे से डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के बातचीत)

कहानी

8.डाइन/तुषार कांत उपाध्याय/26

लघुकथा

9.मुँहनोचवा- केशव मोहन पाण्डेय/30

10.सोना के गहना- अंकुश्री/61

कविता / गीत / गजल /

अंक के छंद/सवैया/31-32

11.कन्हैया प्रसाद रसिक,

12.संगीत सुभाष

13.गीत आ गजल- सतीश प्रसाद सिन्हा/33

14.गीत- दिनेश पांडेय/34

15.गीत- पंकज तिवारी/35

16.गजल- जवाहर लाल 'बेकस'/35

रिपोर्ट/62-63

17.'सँझवत' के प्रवेशांक का विमोचन के रिपोर्ट, फोटो आ रिपोर्ट के कतरन

समीक्षा 18.पांडेय कपिल से रू-ब-रू करावत अनमोल विशेषांक : सीमा मिश्र/47

स्तंभ

धरोहर- 19.मनोरंजन प्रसाद सिंह के एगो लोकप्रसिद्ध कविता/59

किताबि आ पत्रिका : एक नजर में /42-46

पत्रिका-

21/25.भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/परास /गदहपूरना/निर्भीक संदेश/माई

किताबि

26.चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में- संपादक- डॉ. रामजन्म मिश्र

27.गोपी गीत- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

28.त्रिवेनी- डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'

29.निर्भीक अभिनंदन ग्रंथ

30.भोजपुरी लोक-धारा- डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

31.भोजपुरी साहित्य सेवी- रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष'

32.कविता कमाल के- संपादक- अरुणमोहन भारवि

33.कहानी कमाल के- संपादक- अरुणमोहन भारवि

34.आपन माटी आपन गीत- जगन्नाथ मिश्र

35.कवना बने रहलू- संपादक- जगन्नाथ मिश्र

36.पुरवइया के लहरा- संपादक- जगन्नाथ मिश्र

37.रामजियावनदास 'बावला'- संपादक- इंद्र नारायण सिंह

38.किसिम किसिम के फूल- श्रीभगवान पांडेय 'निरास'

39.रेत के सफर - आसिफ रोहतासवी

40.फूल हरसिगार के- डॉ. परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'

41.भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

42.तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की- अजीत दुबे

43.बिहार के पर्व-त्योहारों के गीत- डॉ. लक्ष्मी सिंह

44.घरौंदे रेत के थे- विजय प्रकाश

45.डॉ. नंदकिशोर तिवारी अभिनंदन ग्रंथ

46.संभवामि युगे-युगे- केशव मोहन पांडेय

47.सुधियों की नागफनी- विजय गुंजन

48.**व्यक्तित्व**- भोजपुरी गौरव अर्जुन कुमार चौधरी/64

संपादकीय

भोजपुरी के गँवारू भाषा जनि बनाईं

भोजपुरी दू डेग आगे त हिंदी दू डेग पाछे

हिंदी के कुछ तथाकथित विद्वान एह घरी भोजपुरी पर आपन-आपन ब्रह्मास्त्र चलावे में लागल बा लोग। ऊहन लोग में ई डर समा गइल बा कि भोजपुरी के जहाँ संविधान का आठवीं सूची में जगह मिलल कि हिंदी सतनास के गइलि। उहाँ सभ के गणित विषय ढेर प्रिय हो गइल बा। बड़ा नीमन फर्मूला निकलले बानी सभे- "भोजपुरी दू डेग आगे त हिंदी दू डेग पाछे।" अतने ना, उहाँ सभ भोजपुरी के 'बोली' बतावे भर भी अध्ययन तनी ढेरे क लेले बानी।

अब उहाँ सभ के के बताओ कि जवन आजु मानक हिंदी बिया, तवन पहिले 'खड़ी बोली' रहे आ हाँ खा तक सधारन जनता में 'खड़ी हिंदी' का नाँव से जानल जात रहे। भारतेंदुओ युग में गद्य के भलहीं शुरुआत हो गइल रहे बाकिर कविता त काफी बाद में, ऊहो टुक-टाँइ टुक-टाँइ लिखाए शुरू भइल। हिंदी के ई सरूप बनल द्विवेदी युग में, जबकि ओकरा पहिले तुलसी के अवधी, सूर के ब्रजभाषा अउर कबीर के भोजपुरी आम जन में प्रतिष्ठित रहली सन। साँच त ई बा कि एहिजा भाषा विज्ञान के कवनो जरूरते नइखे, एहिजा इतिहासे के चरचा ईमानदार चरचा कहाई। हर भोजपुरिया का भीतर अपना राष्ट्रभाषा हिंदी खातिर अशेष सम्मान आ प्यार बाटे। भोजपुरी हमनी के मातृभाषा हटे। हिंदी के मजबूती का नाँव पर भोजपुरी के घवदाह कइल कवनो चल्हाकी के काम ना कहाई।

सर्वे का फार्मेट में बदलाव कराईं

भोजपुरी के संविधान का आठवीं अनुसूची में रखवावे का विरोधी लोगन में प्रो. अमरनाथ जी के पहिल चर्चा होला। उहाँका भाषा आ साहित्य के विद्वान हईं। उहाँके चिंता अंकगणित के लेके बा। हिंदी का मजबूती के चिंता कइल कवनो गुनाह थोरे बा ? ई त सभ में होखेके चाहीं। बाकिर एकरा खातिर भोजपुरी के विकास रोकल कहाँ से सही कहल जाई ? ई काम भोजपुरी का विकास के बेगर रोकलो त होइये सकता।

हम उहाँके एगो फेसबुक पोस्ट पर आपन टिप्पणी देले रहीं। हम लिखले रहीं कि सर्वे का वर्तमान स्वरूप से हिंदीभाषी के वास्तविक संख्या सामने नइखे

आवत। अहिंदीभाषी क्षेत्र में भी हिंदी बोले-लिखे-पढ़ेवाला के नीमन संख्या बाटे। हिंदी देश के गर्व के भाषा ह। गाँधीजी आदि महापुरुष लोग आजादी से पहिलहीं एकरा के राष्ट्रभाषा मानि लेले रहन। संपर्क भाषा का रूप में भी भारत में एकर केहू सानी नइखे। वर्तमान में हिंदी के विराट रूप राष्ट्रभाषा के बाटे ; एकर दरजा भारत सरकार के प्रथम राजभाषा के बा। हिंदी कवनो बड़हन भूभाग के मातृभाषा ना हटे, एहसे मातृभाषा वाला वर्ग में हिंदी के ना राखल जाएके चाहीं। एकरा खातिर एगो अलग कॉलम होखेके चाहीं ताकि सभ भसन के मिलाके जवन संख्या बने, तवना में ई मति जुटो। खाली अतने बदलाव से कवनो मातृभाषाभाषी के संख्या कम ना होई आ हिंदीभाषी के वास्तविक संख्या सामने आ जाई। आजु देश के अधिकांश लोग अपना भाषा का साथे हिंदियो में संवाद करतारे, एहसे एकर जरूरत पक्षपातपूर्ण भी ना कहाई।

हमरा एह आशय के टिप्पणी पर केहू के कवनो प्रतिक्रिया त ना रहे बाकिर कुछ दिन का बाद अमरनाथ जी के अगिला पोस्ट में एह आशय के एगो प्रस्ताव भारतीय भाषा परिषद् , कोलकाता से पारित करववला के आइल रहे। एकरा बादो आजु जब एह संदर्भ में नकारात्मक टिप्पणियन के बाढ़ि लउकतिया त चिंता होता।

ध्वनि आधारित वर्तनी

सोशल साइट पर बीच-बीच में भोजपुरिया लोगन के व्यंगो पढ़े के खूब मिलेला। कुछ लोग त ओह लोगन खातिर गारियो देबे खातिर उतारू हो जालन, जे उनका भाषा में तनिको दोष निकालि देले होखे। माने भोजपुरी एगो अइसन भाषा ह, जवना खातिर पढ़ल-लिखल बिलकुल जरूरी नइखे, जवन मन करे, जइसे-तइसे लिख दीहीं। ऊहे करेक्ट आ ऊहे परफेक्ट। जो एकरे के सही मानि लिहल जाउ त सहजे में भोजपुरी का स्तर के आकलन कइल जा सकता। फेरु एकरा खातिर अतना ढंढ-कमंडल बन्हला बिना कवन अकाज बा भाई ?

वर्तमान में गईल, नईखे, कईसे आदि शब्दन के भरमार लउके लागल बा। अलग-अलग क्षेत्रन में कुछ शब्दन के रूप अलग बा, ओकर प्रयोग एक हद तक जायज बा, बाकिर जवना शब्दन के वर्तनी ओकरा ध्वनि का अनुरूप नइखे, ओकरा प्रयोग के उपयुक्त कइसे मानल जा सकता ? बलाघात का कारन गइल, गइलऽ आ गऽइल के अलग-अलग ध्वनि मिलेले बाकिर गईल, नईखे, कईसे आदि के ध्वनि कतहीं नइखे। एहिजा 'इ' (ह्रस्व) के प्रयोग ठीक रही। मानकीकरण का राहि में भोजपुरी भलहीं ढेर डेग आगे ना बढ़ल होखे, बाकिर नीमन त ईहे होई कि भोजपुरी शब्दन का ध्वनि के

महसूस कइल जाउ आ ओकरा खतिर सही वर्तनी के प्रयोग कइल जाउ। हम अन्य संपादक लोगन से भी अनुरोध कइल चाहबि कि ध्वनि का आधार पर जो वर्तनी सही नइखे लागत त ओकरा के जरूर संपादित कइल जाउ आ गाहे-बेगाहे एह आशय के कुछ लेख आ टिप्पणी भी प्रकाशित कइल जाउ।

भोजपुरी के गँवारू भाषा जनि बनाईं

भोजपुरी के गँवारू भाषा बनावे प उतारू लोगन से भी हमरा बहुत शिकायत बा। बोली से भाषा तक पहुँचे में भाषा के (मोटामोटी) एकरूपता काम आवेले आ ओकरे कारन मानकत्व मिलेला, हालाकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर का भसन में भी ई गुन नइखे मिलत। बाकिर, एह दौरान जवन बात सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होले ऊ ह "भाषा के स्तरीयता का प्रति सचेष्टता"। लगातार लागल रहे के परी एह पुनीत कार्य में, एकरा सङहीं समय का सङहूँ चलेके परी। वक्त का प्रवाह से भाषा का प्रवाह के अलग नइखे कइल जा सकत। लोकप्रिय आ सहज आगत देशी-विदेशी शब्दन के अपनावल भी ओतने जरूरी बाटे ना त भाषा से सहजता गायब हो जाई। समय का साथ चले में कई गो चीजन के छूटि जाए के खतरा भी रहेला बाकिर ओतना मोह त बाद क के चलहीं के परी। एहसे सहज बोलचाल में आ रहल अलग भसन का शब्दन पर नाक-भौं मति सिकोरीं, भाषा के गँवारू बनावे खातिर कोपभवन में मति चलि जाईं। जब ढेर लिखाए आ बोलाए लागी त कई गो शब्द आपन रूप बदलि दीहें स। इंतजार कइल जाउ। हमनी के ज्यादा से ज्यादा ध्यान लिखे आ बोले पर रहेके चाहीं।

कर्द्दी आ संवेदना

भोजपुरी का प्रति प्रेम सोशल साइट आ धरना-प्रदर्शन में त खूब लउकता बाकिर जब केहू पुस्तक आ पत्रिका मुफ्त में आ आपन डाको खर्च लगाके भेजता, तबो भोजपुरी के अधिकांश सम्मान्य जन पावतियो के एगो शब्द नू लिखतानी नू सुनावतानी, प्रतिक्रिया लिखल त दूर के बात बा। भोजपुरी संस्कृति के जीएवाला लोग में कर्द्दी आ संवेदना के लगातार बढ़ रहल अभाव चिंताजनक बा। साहित्यकार आ संपादक लोगन से जब हमार बात होला त अक्सर ई मुद्दा उठ जाला आ 'खेद प्रकट' आउर संतोष का सङे मन का कोठिला में बन्न हो जाला। जरूरी बा एह खतरनाक स्थिति पर सोचल। अइसन काहें होता ? अउर संदर्भन में लोगन में कर्द्दी के अभाव नइखे लउकत, खाली भोजपुरिए में ई बेमारी आपन पाँव ढेर बढ़ा रहल बिया। ई अनदेखा कइल ह आ एकरा मूल में अहंकार से लबालब समाजनिरपेक्ष व्यक्ति के अहंकार काम करेला। किताबि भा पत्रिका

रउरा भले घटिया भा अनस्तरीय लागल होखे, एक बेरि फोन उठाके त बोलि दीं कि मिल गइल, ना रिस्पांस मिले त मैसेज कर दीं, अतना से रउरा अनलिमिटेड पैक के एको पइसा के नुकसान नइखे होखे जात। अतने से ओह लेखक भा संपादक के कम से कम उत्साह त बढ़ि जाई। ई इग्नोर करेवाला रवैया भोजपुरी का विकास में कतना सहयोगी बनी, ई त भविष्ये बताई।

चलत-चलत एगो प्रस्ताव।

ष आ श के प्रयोग

जहँवा हिंदी का शब्द के प्रयोग अपरिवर्तित रूप (बिना विभक्ति-प्रत्यय) में होखे, ओहिजा 'ष' आ 'श' के प्रयोग करेके चाहीं। उच्चारण में असहज प्रयोग का बादो इन्हनी से बनल शब्द अबहिंयो हिंदी में ओसहीं बनल बाड़न। उदाहरण खातिर हिंदीभाषी भी आ हिंदियोभासी- दूनो पद सही बा बाकिर हिंदीभासी भा हिंदी भासा के प्रयोग ठीक ना रही। ई मत भूलल जाउ कि सभ भोजपुरीभाषी अपना सहज रूप में अब हिंदीभाषी भी (हिंदियोभासी) बाड़न। अपना के बिल्कुल अलग देखावे खातिर दू-दू गो शब्द दिहला से आगिल पीढ़ी भ्रम में आके गलत प्रयोग के शिकार हो सकतिया। हमनीके मए मेहनत उहनीके सँवारे खातिर होखेके चाहीं, बिगारे खातिर ना।

ङ के प्रयोग

हिंदी में 'ङ' के प्रयोग बिना स्वर के आ खाली अनुस्वार का रूप में बा। भोजपुरी के ई सौभाग्य बा कि ओकरा में 'ङ' के प्रयोग स्वर का सङहूँ बा- जइसे, महङ, महङा, महङी, बहङी, महङू, महङे, महङो। रउआँ लाख चाहबि बाकिर महँग, महँगो, बहँगी आदि में भोजपुरी माटी के ध्वनि ना मिली। एहसे हमार आग्रह बा कि अपना एह थाती के अनदेखा मति कइल जाव आ लेखन में एकर सहज प्रयोग कइल जाव। एही तरह के कुछ सहज प्रयोग भोजपुरी के अलग पहचान खातिर बाद में आधार स्तंभ होइहें स। भाषा में कबो-कबो संकट के स्थिति आ जाले। अब जो 'सवाङ' के 'सवांग' लिखबि त शवांग के बिंब त आइए नु जाई मन में ! अइसहीं, संस्कृत के 'षडानन' का तर्ज पर हिंदी में 'षड़ानन' लिखबि त उच्चारण त 'सड़ानन' नियन होइबे करी। कम से कम एह जुगुप्सामिश्रित हास्य से त हमनी के बाँचहीं के चाहीं। 'सड़ानन' ना कहिके निकटस्थ (आ अवधी में भी स्वीकृत) उच्चारण (खड़ानन) त कइले जा सकता।

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति का बढ़ंती खातिर आस लगवले शुभकामना करत,

रामरक्षा मिश्र विमल

अनिरुद्ध : कुदरत आ मनुजता के पक्षधर गीतकार

भगवती प्रसाद द्विवेदी

पिछला सात मार्च 2019 के डेढ़ बजे दुपहरिया में कुदरत के सुकुमार आ मूर्धन्य कवि अनिरुद्ध जी के दैहिक अवसान मुजफ्फरपुर में अपना बेटा के आवास पर हो गइल। अनिरुद्ध जी, जेकरा के भोजपुरी के वर्ड्सवर्थ आउर सुमित्रानंदन पंत कहल जात रहे। अनिरुद्ध जी, जे हिन्दी कवि सम्मेलन के मंच पर ओह घरी के नामी-गिरामी कवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, जानकीवल्लभ शास्त्री वगैरह का संगही भोजपुरी के अर्जुन सिंह 'अशान्त', सतीश्वर सहाय वर्मा सतीश, उमाकांत वर्मा का साथे धूम मचवले रहे। सन् 2018 में जब उहाँ के दूगो टटका किताब 'गीतन के गाँव में' आ 'कृष्ण बाल-लीला संगीत नाटिका आउर दोहावली' के लोकार्पण मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज के भोजपुरी विभाग में डॉ. जयकांत सिंह जय आ डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के पहल से भइल, त नब्बे-पार अनिरुद्ध जी के सिरिजनशीलता आ याददाश्त देखि-सुनिके सभे दंग रहे। उहाँ के ना खाली अपना मशहूर गीतन के सस्वर पाठ कइले रहनीं, बलुक चरचा के दौरान गलत पाँती उदधृत करेवाला के टोकि के सही-सही

लाइन बताके सभका के चकित क देले रहनीं। एकानबे के उमिर में आपन चोला छोड़ला से भोजपुरी गीत के एगो बरियार पाया ढहि गइल आ साथहीं एगो जुगो के अंत हो गइल।

अनिरुद्ध जी के भोजपुरी गीत का हलका में ऐतिहासिक अवदान पर चरचा का पहिले गीत आ भोजपुरी गीत पर एक नजर। घनीभूत पीर के कोख से जनमेला गीत। जब दुख-दरद, वेदना आ पीड़ा बेसम्हार हो जाला, त ओही दुखद अनुभूतियन के सुखद आ प्रभावी अभिव्यक्ति गीत का जरिए होला। साँच पूछल जाउ, त बेगर गीत के जिनिगी के कवनो माने-मतलब ना रहि जाला। आखिर जिनिगी-जगत के कवना कोना-अँतरा में गीत के गूँज नइखे ? कुदरत के हरेक हरकत में एकर सुर बखूबी सुनल-गुनल जा सकेला। चिरई-चुरूँग के चहचहाहट में, नदी-पोखरा, ताल-तलइया के प्रवहमान जल में, कुहुकत कोइलर आ पिहिकत पपिहरा के विरह-वेदना में गीते के नू अनुगूँज सुनाई देला। आदिकाल से लेके आजु ले परम्परा के सँगलेहर बनल गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी रग-रग में रचल-बसल जा रहल बा। अगर गीत के दफना दिहल जाउ त सउँसे जिनिगी आ दुनिया के क्रिया-कलाप मसाने नू बनिके रहि जाई !

भोजपुरिया समाज में त गीत केन्द्रीय विधे भर ना, बलुक जिनिगी के धड़कनो ह। इहे ओजह बा कि पैदाइश से लेके मरनोपरान्त बरखी ले कवनो संस्कार गीत के बेगर पूरा ना होला। इहाँ त मउवतो पर गीत बा आ गारियो गवाला गीते में। असल में लोकजीवन के जीवंतता के निशानी ह गीत। चाहे सुख होखे भा दु:ख, हँसी होखे भा विषाद, सिंगार-अहवात-मिलन होखे भा बिछोह- हरेक रंग-रूप, रस-गंध के सवदगर अहसास भोजपुरी गीत करावत आइल बाड़न स। जरि से जोड़ाव आ माटी के सोन्ह-मीठ गमक इन्हनीं के खासियत रहल बा। अपना के 'राम के बहुरिया' मानिके आडम्बर-रूढ़ियन पर चोट करत कबीर के पद-गायन, आजादी के लड़ाई में क्रांतिकारियन के देशसेवा के सबक देत 'बटोहिया' गीत, महेन्द्र मिसिर के ‘पूरबी’, सामाजिक कोढ़ के समूल नाश करे खातिर जनचेतना जगावत भिखारी ठाकुर के जागरण-गीत, घर-परिवार, गाँव -जवार, प्रकृति, देश-दुनिया के खोज-खबर- हर पहलू के गहिर-गझिन अभिव्यक्ति भोजपुरी गीतन में होत आइल बा। एकरा शोहरत के बुलंदी के आलम ई बा कि मोती बी.ए. के गीतन के मार्फत फिल्मी दुनिया में पइसल भोजपुरी गीत हर जगह आपन सिक्का जमा चुकल बा आ पहिले कैसेट कम्पनियन आउर

अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया खातिर कम से कम लागत से अधिकाधिक दरब उगाहे वाला इहे धन्हा बा।

भोजपुरी के मूल सुभाव आ रचाव गीत के ह। एक बेरि जब डॉ. केदारनाथ सिंह जी ई बात कहले रहनीं, त किछु लोग नाक-भौं सिकोड़ले रहे, बाकिर असलियत के भला कब ले अनदेखा कइल जा सकेला। आजु गीत के भोजपुरिया समाज से काटे आ भोजपुरिया प्रकृति के कृत्रिम चकाचौंध में अझुरावे के साजिशो चलि रहल बा। जब ले समरथी गीतकार आगा ना अइहन, घटिहा गीतन के घटाटोप से निजात ना मिलि पाई। तुक्कड़न, भाँड़न, देहदेखाऊ नारी-गायकी के एह दौर में गीत के परान साँसत में बा। सरकारी मीडिया, मंच आ इलेक्ट्रॉनिकी मायाजाल से मुकुती पाके आजु किछुए गीतकार अपना स्तर आउर उत्कृष्ट सिरिजना से भोजपुरी गीतन के गरिमा के बरकरार राखि पवले बाड़न। पिछिला सत्तर -बहत्तर साल से एकानबे के उमिर ले रचनात्मक लेखन करेवाला पुन्नश्लोक अनिरुद्ध जी अइसने जियतार गीतकार रहनीं, जेकरा के भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद, मुजफ्फरपुर 'भिखारी ठाकुर सम्मान' से सम्मानित कइले रहे। अनिरुद्ध जी के जनम नारायणी नदी के नियरे बसल सारन जिला के गाँव डीहीं (मकेर) में रामपति देवी के गरभ से नौ मार्च, 1928 के भइल रहे। अबोधे उमिर में बाबूजी जयदेव सहाय से बिछोह अंतर्मुखी आ प्रकृति-प्रेमी बना दिहलस। खेती-किसानी करत कइसहूँ आई.ए. तक के पढ़ाई हो पावल आ बुनियादी विद्यालय में शिक्षण के काम होखे लागल। साइकिल चलाके किसानी-मास्टरी में तालमेल बइठावल, धरमपत्नी सरस्वती देवी के सहजोग से छव बेटियन आउर दू बेटन के लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई आ शादी-बियाह जद्दोजहद से सम्भव हो पावल। लरिकाइएँ से चित्रकला-संगीत में रुचि राखेवाला अनिरुद्ध जी के गँवई जिनिगी आ कुदरत से गहिर जुड़ाव गीत रचे खातिर अलचार कऽ दिहलस। ओह घरी एक ओर राष्ट्रीय चेतना के गीत रचात रहे, त दोसरा तरफ छायावाद के जोर रहे। तब कवि-सम्मेलन के मंच के गरिमा रहे आ तमाम नामी-गिरामी रचनाकार ओह में शिरकत करत रहलन। 'फिरंगिया' के अमर गायक प्रिंसिपल मनोरंजन आ भोजपुरी रतन रामविचार पाण्डेय से अभिप्रेरित होके सन 1949 में अनिरुद्ध जी के गीत-सिरिजन के सिलसिला शुरू भइल आउर कवि-सम्मेलन के मार्फत उहाँ के शोहरत बुलंदी के छूवत चलि गइल। ओइसे त अनिरुद्ध जी अध्यापकी करत गीत, गजल, दोहा, संगीत रूपक वगैरह के सिरिजना लगातार

क के नावँ-जस कमइनीं, बाकिर सबसे जियादा प्रसिद्धि उहाँ के गीति-चेतना के जियतार कवि का रूप में मिलल आ एकमात्र संग्रह 'पनिहारिन' चरचा का केंद्र में रहल। एने आके उहाँके पुस्तक-प्रकाशन के दिसाईं धियान दिहनी आ गीत-संग्रह 'गीतन के गाँव में' का सँगही 'कृष्ण बाल-लीला संगीत नाटिका आउर दोहावली' के प्रकाशन भइल। अंतिम समय में उहाँ के गजल-संग्रह आ 'मेघदूतम्' के छपवावे का उतजोग में लागल रहनीं। बंधुवर ब्रजभूषण मिश्र के दिली ख्वाहिश रहे- उहाँ पर केंद्रित अभिनंदन-ग्रंथ आ एगो पत्रिका के विशेषांक प्रकाशित करवावे के।

'गीतन के गाँव में' अनिरुद्ध जी के अइसन बेशकीमती संग्रह बा, जवना में प्रकृति के मार्फत जीवन-जगत आउर खास तौर से भोजपुरिया समाज के अत्यंत अनुभूतिपरक चित्र उकेरल गइल बा। अठासी गीतन के एह संग्रह में कतहीं कुदरत के मानवीकरण कइल गइल बा, त कतहीं मानव के कुदरतीकरण के झलक मिलत बा। गँवई लोक जिनिगी के चटख आ मनोहारी बिम्ब ठाढ़ करे में त एह गीतकार के जवाबे नइखे। गीतन का जरिए जिनिगी के सुख-दुःख, हरख-विषाद, आस-हुलास, हताशा-निराशा आ कुल्हि मिला के मानवीय करुणा के शाश्वत भाव जगावल कवि के मकसद रहल बा। हमार अहोभागि रहे कि संग्रह के भूमिका हमरे से लिखवावल गइल रहे।

गीत-संग्रह के शुरुआत सरस्वती वन्दना से होत बा आ किसिम-किसिम के रंग-ढंग, विनयी भाव से मइया शारदा के सुमिरत-विनवत गीतकार शिव, गोविंद-गोपाल के गोहरावत ओह भारत-भूइँ के माथा टेकत बा, जेकर सिंगार-पटार, नदी -पहाड़, फल-फूल-फसिल के धानी आँचर बा। एगो चित्र देखीं :

केसर तिलक हार नदियन हिय,
कटि करधनी बिंध्याचल
सिन्धु लहरिया झनक चरनिया,
बाजे नूपुर पायल
फसल-फूल भूषण बन चन्नन
महके धानी आँचर
बंदउ भारत भुइँया,
मइया-पाँव पखारे सागर।

भोजपुरी के महावीर बाबू कुँअर सिंह के मरदानगी पर माथ नवा के कवि तमाम शहीदन के मजार पर सरधा के अँजुरी-भर फूल चढ़ावत बा :

हर मजार पर हर समाधि नित
पहिला फूल चढ़ाईं
लड़ल आखिरी दम तक, आईं,
सादर शीश झुकाईं
छतिया राखे भारत भुइँया
जेकर चरन निशान।

कवि के दियानत साफ बा, एह

से परदुखकातरता आ मनुजते के दोसर नाँव ऊ धरम बतावत बा। गोस्वामी तुलसीदास के 'मानस के हंस' बतावत कवि के कहनाम बा :

सौ-सौ बेर नमन तुलसी के,
करीं नाम के चन्नन
रामचरित के हर अच्छर में
दिखे सिया-रघुनंदन
मानस हंस रखल चुग मोतिन,
मानस ज्योति जरावे रे।

गीतकार गँवई जिनिगी के नजदीक से देखले भर नइखे, बलुक ऊ ओकरा के भरपूर हबेखले बा- प्रकृति के सँगलेहर बनिके। एही से, भोर से लेके रात ले, बसंत के होरी से लेके चइत के रंग-रसिया चइता ले, गरमी के हरवाही से लेके सावन के फुहार आ बरसात के बाढ़ ले, शरद के पूरनमासी से लेके आसिन-अगहन के भोर ले- हर जगहा कुदरत के मानवीकरण देखते बनत बा आ अइसन लागत बा, जइसे मउसम-प्रकृति के ऊ कुदरती कौतुक पढ़निहार के आँखी के आगा नाचत होखे।

कवि कुंजबिहारी कुंजन अपना एगो गीत में सबेरे धरती पर उतरत ललकी किरिन के उपमा ससुरा में लजात डेग डालत नवकी कनिया से देत कहले रहलन :

ससुरा में आवे जइसे नई दुलहनिया
लजात आवेली तइसे ललकी किरिनिया।

अनिरुद्ध जी 'भोर भइल' में ओइसने मनमोहक तसवीर खिंचले बानीं :

पनिघट डोली उतरत झाँके नइकी कनिया
कुमकुम केशरिया सेनुरिया रँग भोर भइल।

असहीं, 'सँझिया' में 'सुसुकत ससुरार साँझ' आ 'सँझिया मँगिया धोआय' आँतर के उदासी से भरि देत बा :

सुसुकत ससुरार साँझ,
डोली मग झाँक चले,
किल रास ताने सँग
घोड़ा रवि हाँफ चले,
के फेंकल खोल भरल
बिंदिया-डिबिया अकास
भर गइल तरेंगन नभ,
धरती के रोज छले,
चैन-सुख सुहाग ले,
सँझिया मँगिया धोआय
परिछइँयो छोड़े सँग,
दुख-साथी धीर।

मन मोहेवाला चाक्षुष बिम्ब के उरेहल अनिरुद्ध जी के काव्यात्मक कौशल आ सुदीर्घ साधना-चिंतन के प्रतिफल रहे। एकरा संगही कवि अभावग्रस्तता में जीयत परिवार के बेसम्हार पीर के, उदवेग के बानी दिहल आपन दायित्व बूझत रहे, जेकरा घरे चूल्हा नइखे जरत आ आदमीयत राख हो रहल बा :

छान्ही निकले न धुआँ,
घरवा कइसे चिन्हाय,
माहुर डूबे सगरे,
कवनो ना दिसि बुझाय,
बाबू-माई बेमार,
लइकन भूखे रोवे,
बेखबर पड़ोसी,
दिल छोटा, बड़का कहाय,
राख भइल अदमिअत,
चिता जर मिटे निशान,
दानव कइसे चिन्हाय, आदमी शरीर,
बुता रहल दिया नेह बिनु बाती लहक गइल
पुता गइल करिखा से जिनगी तसवीर।

उहाँ के हर गीत के ई खासियत बा कि एक तरफ प्रकृति से जुड़ल बिम्ब आ प्रतीक पढ़निहारन के अभिभूत करत बा, उहँवें दोसरा ओर जनपीर के उदवेग गहिर-गझिन संवेदना जगावत बा। बाकिर कबो हताश-निराश ना होत रहे आ हरदम करम-मेहनत पर बिसवास कके जद्दोजहद करे के सनेस देत जनचेतना जगावत रहे :

हाथ कब पसरले मेहनत कवनो द्वार बा
दिल के बदशाह ताज बा, करन सिंगार बा।

आजु जब मनई कुदरत से ना केवल कटल जा रहल बा, बलुक प्रकृति के शोषन-दोहन कके अपना पाँव पर खुदे कुल्हाड़ी चला के जन-जन के जिनिगी नरक बना चुकल बा, अनिरुद्ध जी के भावप्रवण गीत प्रकृति से जुड़े आ जोड़े के दिसाईं हरदम अगहर भूमिका निबाहत रहिहन स। एह से, अनमोल बाड़न स उहाँ के गीत। कथ, शिल्प आ संवेदना- हर दृष्टि से, लाजवाब बाड़न स ई। शहरी लोगन के गाँव का ओर लवटहूँ खातिर ई गीत अंतर्मंथन बदे मजबूर करत बाड़न स। गीतकार अपनो गाँव से परिचय करावत लिखले रहलन :

दूध भरल गंडक नदी नियरे डीहीं गँउआ
झुक जाये शीश धरत गँउआ-भुइँया पँउआ
हम भले अमीर-पूत, दिल-दरद गरीब के
पोता श्रीकृष्ण के, अनिरुद्ध बा निज नँउआ
बाटे सारन जिला बिहार पता ठाँव
बड़ा नीक लागेला हमरे ऊ गाँव।

गाँव, लोक आ जनजीवन के कुदरती, संघर्षशील आ अभिभूत करेवाला छटा छिटकावत गीतन के गाँव में जवन पनिहारिन रहे, ऊ 'कृष्ण बाल-लीला' सुनावत एह मतलबी दुनिया से कूच कऽ गइल, बाकिर जब ले प्रकृति रही, गाँव के संघर्षशील मनई रहिहन, अनिरुद्ध जी के गीत मनुजता के पक्ष में ठाढ़ होके सामाजिक बदलाव खातिर उकसावत-उदबेगत रहिहन स। अगर उहाँके अनछपल कृतियन के प्रकाशन-मूल्यांकन होखे त ई उहाँका प्रति सही माने में सरधांजलि होई। हमार प्रणामांजलि।

कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

भोजपुरी जन-जीवन में श्रीकृष्ण

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

गाँव में किरतन गावे के परम्परा रहे। हमरा गाँव में किरतन गवनई करेवाला लोग ई एगो गीत कढ़ावत रहे- 'जमुना किछारे मोहन बँसिया हो बजवले, पवनवा झिहिर-झिहिर बहेला हो राम'। हमरा अतने इआद बा। बाकिर इहे ना अउर कतना गीत रहे कृष्ण संबंधी जे गवनिहार लोग गावे। हमरा भोजपुरी क्षेत्र में रामकथा गावे सुने के व्यापक आधार बा, काहे से कि राम के प्रशिक्षण बक्सर में भइल आ जवन तेज भा morning Shows the day दिखाई पड़ल ऊ भोजपुरिए क्षेत्र के देन रहे। 'कौशिकायन' (प्रबंध काव्य) में कवि अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी एगो सूत्र पद देले बानी-

"गनत गूँथत कौशिक रहलें
मन में जइसे-तइसे
मिथिला के माटी के सार्टी
अगिन अवध से कइसे "

मिथिला आ अवध- दूनों भोजपुरी के अवार -जवार के संस्कृति ह आ ओकरा से प्रभावित भइल चाहे ओकरा के प्रभावित कइल सोभाविक प्रक्रिया बा। बाकिर, श्रीकृष्ण के व्यापक प्रभाव काहे आ कइसे ? हमरा बुझाला श्रीकृष्ण के सोरहो कला संपन्न भइल, उनकर प्रेम आ उनकर रसिक रूप आम जन का एतना भावेला कि सँउसे जगत पर ऊ व्याप रहल बाड़न। भोजपुरी लोक कृष्ण के अपना में समेटलहीं बा जवना से लोकगीतन में भगवान कृष्ण के महत्त्वपूर्ण स्थान भेंटाइल बा आ लोक से इतर शिष्ट साहित्य में चाहे ऊ प्रबंध होखे भा मुक्तक, कृष्ण का नायकत्व मिलत रहल बा।

'भोजपुरी लोकगीतन में ब्रज के परिवेश-चित्रण' नामक लेख में लोकसाहित्य मर्मज्ञ पं. गणेश चौबे ई मनले बानी कि भोजपुरी क्षेत्र में कृष्ण संबंधी दू तरह के गीत मिलेला। एक त ओइसन गीत बा जवना में कृष्ण कथा भा कृष्ण लीला बा आ दोसर ऊ जवना में कृष्ण बेटा, पति भा प्रेमी के प्रतीक बाड़ें। भोजपुरी में संस्कार गीतन के लमहर आ पोढ़ परम्परा बा। सोहर गीतन में

कृष्ण, यशोदा, देवकी, यमुना नदी, कदम गाछ कइसे अमाइल बाड़ें, एक दू गो उदाहरण देखल जा सकत बा-

सात सखी मिलि जाइब जमुना नेहाइबि हो।
ललना ! जमुना के निरमल पानी
कलस भरि लाइब हो।
कोई सखी हाथ मुँह धोवेली,
चरन पखारेली हो।
ललना ! जसोमति चारु ओर चितवे
तिवइआ एक रोवेली हो।

यशोदा के कान में देवकी के रोअला के आवाज पड़त बा, त उनका दुख के कहानी सुनत बाड़ी आ वचन देत बाड़ी कि अपना संतान के मरवा के तहरा संतान के रक्षा करब।

कृष्ण के साँझ भइला से खेले जाए से यशोदा रोकत बाड़ी। ऊ ना मानत बाड़न। देरी भइला पर ऊ खोजे जात बाड़ी त देखत बाड़ी-

खेले कदम जूड़ि छँहिया त मुरली बजावत।
देखि के कन्हैया कदम डारी भागेलें।।

कृष्ण के जनम पर नंद के दुआरे उत्सव मनावल जाएवाला बरनन एगो सोहर में कइसे हो रहल बा, उदाहरण देखीं-

नंद जसोदा घरे कान्ह जनमलें
तीनों लोक आनंद भइले हो
उहँवा से धगड़िनि दुअरा आइल
बोल बोलेले अभिमान हो

हमनी किहाँ फगुआ गावे के प्रचलन रहल बा। एक दू लाइन के धमार गवाला। ओहू में कृष्ण कथा बा- कालिया नाग के नाथे के प्रसंग-

कूदि पड़े जमुना में कन्हैया कूदी पड़े जमुना में
लड़िका हो गोपाल कूदि पड़े जमुना में

अइसहीं सावन में कजरी खूब गवाला। कृष्णलीला के एगो प्रसंग एगो कजरी गीत में गावल जाला-

आरे रामा, कृष्ण बने मनिहारी
पहिर के सारी ए रामा !

जवन हिन्दी साहित्य में भक्ति काल आ रीतिकाल कहाला, ऊ भोजपुरी के संतकाव्य भा आध्यात्मिक काव्य के काल बा, जवना में निर्गुण निराकार ब्रह्म के खोज आ चेतना विकसित भइल बा। एही से ओह काल में सगुन ब्रह्म के उपासना के अभाव बा। सीधे उनइसवीं सदी के अंत आ बीसवीं सदी के आरंभ में रामकृष्ण वर्मा बलवीर आ महेन्दर मिसिर के काव्य में कृष्ण का जगह मिलल बा। बलवीर पर रीतिकालीन प्रभाव बा त महेन्दर मिसिर पर भक्ति आ रीति दूनों के। बलवीर त कृष्णे हवन। एगो आलम्बन विभाव के बिरहा छंद देखीं कइसे कृष्ण आ जमुना के तट आलम्बन बनत बाड़ें-

लजिया दबावे मनमथवा सतावे मोसे
एको छन रहलो न जाय।

लखि बलविरवा जमुनवा के तिरवा री
हियरा के धीरवा नसाय।।

अइसहीं, प्रोषितपतिका नायिका के लक्षण देखीं, रामकृष्ण वर्मा बलवीर कृष्ण के जरिये कइसे बतावत बाड़न-

फुलिहें अनरवा सेमर कचनरवा
पलसवा गुलबवा अनंत।
बिरहा क बिरवा लगायो बलविरवा
सो फुलिहें जो आयो है बसंत।।
रजवा करत मोर रजवा मथुरवा में
हम सब भइलीं फकीर।
हमरी पिरितिया निबाहे कइसे ऊधो
बलविरवा की जतिया अहीर।।

महेन्दर मिसिर कृष्णभक्ति संबंधी काव्य-रचना भरपूर कइले बानी। राधा कृष्ण के प्रेम के चित्रण के बहाने रीतिकालीन कवियन अस खलिहा नख-शिख बरनन, काम-केलि दरसन आ शब्द के चतुराई से भरल प्रयोग उहाँ का ना कइले बानी। उहाँ के भाव सात्विक बा। विप्रलंभ सिंगार के एक से एक उदाहरण मिली, ओरहन आ खोबसन के रूप में जे प्रेम के पराकाष्ठा बा-

लाजो ना लागे स्याम गइलऽ मधुबनवा
से काहे के पिरितिया लगवलऽ हो स्याम।
हमनी के छोड़ी स्याम कूबड़ी पर देलऽ प्रान
से काहे के सवतिया बनवल हो स्याम।

एगो कजरी धुन में एह सात्विक प्रेम के दरसन करीं-

ऊधो स्याम करे निठुराई
हमसे प्रीत लगाई ना।
मधुबन छोड़ भये मधुबनिया
कुबिजा रानी भई पटरनिया
ऊधो स्याम दिए ठुकराई,
हमसे प्रीत लगाई ना।

मिसिरजी रचित हई गोदना गीत बड़ा प्रसिद्ध बा। कइसे भोजपुरी आ भारतीय संस्कृति में मरजादा पालन होत बा, एह गीत से पता चली-

बन के गोदनहारी कान्हा,
चललें जहँवा रहली राधा
गउँवा में घूमि के कहे नंद के ललनवा
केहू गोदवाई हो गोदनवाँ
राधाजी सुन के बोली
अपनी केवाड़ी खोली
आवऽ गोदनहरी आवऽ हमरी अँगनवा
हम गोदवाइब हो गोदनवाँ।
कान्हा जब धइले हाथ, राधा ठोकेली माथ
नारी ना हउए ई त हउए मरदनवाँ
कइसे गोदवाईं हो गोदनवाँ ?
भेद जब जनली सखिया,
कहेलें कन्हइया रसिया
तोहरे कारण भइलीं मरद से जननवाँ
तनी गोदवावऽ हो गोदनवाँ !
कहत महेन्दर गाई, रधिका मने मुसुकाई
राधा अउर कान्हा जी के भइलें मिलनवाँ
केहू गोदवाई हो गोदनवाँ ।

भोजपुरी में प्रबंध काव्य के

लेखन के शुरुआत बहुत देरी से भइल, बाकिर ई विधा अब पोढ़ाए लागल बा। भारतीय परम्परा में पौराणिक आधार लेके प्रबंध काव्य, महाकाव्य भा खंडकाव्य के रचना भरपूर भइल बा। एहू में 'रामकाव्य' आ 'कृष्णकाव्य' परंपरा के त कहहीं के का बा। भोजपुरियो एहमें पीछे नइखे। कृष्णकथा आधारित कई एक गो प्रबंधकाव्य भोजपुरी में लिखाइल बा, जवन विलक्षण भाव भंगिमा से आपन अलग पहिचान बनावत बा। पहिला एगो छोटहन खंडकाव्य- 'राधा मङ्गल' आइल, कवि रहलें - आचार्य विश्वनाथ प्रसाद। ब्रह्मवैवर्त पुराण से सूत्र लेके श्री रघुनाथ दास रामसनेही जी द्वारा अपना ग्रंथ 'विश्राम सागर' में राधा कृष्ण विवाह के चर्चा आइल बा। ओही संकेत आ सूत्र के आधार लेके कवि राधा कृष्ण विवाह के प्रबंधत्व प्रदान कइले बाड़ें। ई विषय कवनो आधुनिक भारतीय भाषा में ना उठावल गइल बा। देखल जाए कि विवाह के अवसर के चित्र के गँई खिंचले बाड़न-

मधुर मधुर पद धरीं ना धरतिया
मङ्ल मड़उआ के ओर जी
एवमस्तु कहि माधव मुसुकइनी
देखींले दुलहिन ओर जी
होम कुण्ड विधि अगिनी जगावेले
शंख धुनि मङ्ल वितान जी
दुलहिन वर सटि बइठेले वरासन
गन्धर्वी गावैली गान जी

कृष्ण कथा के कुछ अइसन प्रसंग बा जे भोजपुरी कवि लोग का बड़ा पसन पड़ेला । ओही में सुदामा कृष्ण प्रसंग उल्लेखनीय बा। एह प्रसंग के महाकाव्य 'नारायण' आ 'कृष्ण चरित पीयूष' में आनुसंगिक कथा के रूप में त समावेश भइलहीं बा, दू-दू गो स्वतंत्र खंडकाव्य रचल गइल बा- दूधनाथ शर्मा 'श्याम ' के' सुदामा यात्रा' आ रामबचन शास्त्री 'अँजोर' के 'पाहुर'। अँजोर जी अपना 'निरधन के धन श्याम' के नौ गो देवढ़ में से एक देवढ़ सुदामा पर केन्द्रित कइले बानी- 'त ई पहुरा महुरा होइ जाई'। आईं एह तीनों काव्य के रसास्वादन उदाहरण रूप में कइल जाए। सुदामा के उनकर मेहरारू श्यामा, घर के दलिद्दर दूर करे खातिर दुआरिकाधीश श्रीकृष्ण से मिले खातिर प्रेरित करत बाड़ी-

श्यामा सुदामा से रोई कहँऽ ,
श्री श्याम से राउर बाटे इयारी।
साथे पढीं खैललीं-खइलीं,
तोरलीं लकड़ी, भरीं धान कियारी।।
दीन दयाल भुआल नहीं,
उनकर महिमा तिरलोक नियारी।
मीत बा जेकर अइसन राजा,
ऊ आज ले काहे बनल बा भिखारी।।
(पाहुर से)

सुदामा दुआरिकाधीश के दुआरे पहुँच दुआरपाल से निहोरा करत बाड़न कि ऊ श्रीकृष्ण से उनके मिलवा देवे। दुआरपाल श्रीकृष्ण से जा के कहत बा-

हाथ में लोटा व चंदन भाल,
कहे हरि के हमहूँ अनुगामी।
कोंखि में पेट सटे मुँह सूखल,
दुरबलि देह न और बा खामी।
रूप से जान पड़े हमके,
जिनगी भर के ह भिक्षुक कामी।
दुरबलि देह दुआरे खड़ा,
निज नाम सुदामा बतावत स्वामी।

(सुदामा यात्रा)

सुदामा के नाम सुनते श्रीकृष्ण दउरल दुआरे पहुँचत बाड़न आ सुदामा के गले लगावत बाड़न-

नाँव सुदामा सुनँ जबहीं,
प्रभु धाई के जाई धरँऽ अँकवारी।
भेंटत भूप भिखार, निहार चिहाँ
सरदार सभे दरबारी।।
नाहीं देखाइल अउर सुनाइल
सतजुग त्रेता में, द्वापर भारी।
धन्य बा श्याम के धाम दुआरिका,
धन्य इयार कि धन्य इयारी।।

(निरधन के धन श्याम)

अइसहीं कृष्णकथा के मार्मिक प्रसंग द्रौपदी चीर-हरण पर भोजपुरी महाकाव्यन में आनुसंगिक कथा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान मिलल बा, बाकिर दू-दू गो प्रबंध- पहिला दूधनाथ शर्मा श्याम के 'द्रौपदी' आ चन्द्रशेखर मिश्र के 'द्रौपदी' अलगहूँ से लिखाइल बा। एकरा अलावे 'निरधन के धन श्याम' के दोसर देवढ़ में द्रौपदी चीर-हरण प्रसंग उठावल गइल बा। चन्द्रशेखर मिश्र एह प्रसंग के बहुत उच्च कोटि के काव्य सिरजन कइले बानी। द्रौपदी के लाज बचावे खातिर श्रीकृष्ण साड़ी बढ़ावे के अद्भुत काज कर रहल बाड़न-

ऊपर से हरि सारी बढ़ावेलें,
ज्यों झरना झरलें बहुरंगा।
चीर मुड़े मुड़ि के सिंकुड़ै,
नभ बीच बने बड़ छोट तरंगा।
ई छवि देखिके डाहके मारे
मसान से दौड़ल बा शिवनंगा
संकर कौन नया झटकारत
रोकत बा लटकारी में गंगा ?

एह प्रकार से, देखल जाए त गोपी-उद्धव संवाद पर आधारित खंडकाव्य - 'श्याम शतक' (राम बचन लाल श्रीवास्तव), एकलव्य वाला प्रसंग पर गोरख मस्ताना सहित कई कवियन के खंडकाव्य, महाभारत युद्ध के बाद गांधारी कृष्ण संवाद पर आधारित 'धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' (अनिरुद्ध त्रिपाठी अशेष) अउर महाकाव्यन में 'नारायण' (डॉ. चन्द्रधर पाण्डेय कमल), 'लीला पुरुष' (अमर सिंह) आ 'कृष्णचरित

पीयूष' (बालेश्वर राम यादव) से भोजपुरी में कृष्ण कथा के सांगोपांग विस्तार मिलल बा। एगो छोटहन आलेख में सबके चर्चा संभव ना बा। श्रीकृष्ण भोजपुरी जातीय संस्कृति में गहिरे पइठल बाड़न।

लेखक लोगन से

सँझवत' भाषा, साहित्य, संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक हटे। एकरा में सबसे ज्यादा छपेवाली विधा 'निबंध' बिया। कविता (गीत, गजल आ छांदस कविता), कहानी, एकांकी, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार आदि विधा में भी रचना छपेली स/छपिहें स।

आपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना **हिंदी यूनिकोड (मंगल फांट)** में टाइप क के भा अपना मोबाइले से टाइप क के पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाव।

sampadaksanjhavat@gmail.com

सीमा मिश्र
(संपादक)

भोजपुरी त्रैमासिक **सँझवत** पावे खातिर

एक अंक (रजिस्टर्ड डाक) : रु. 60
वार्षिक शुल्क(रजिस्टर्ड डाक) : रु. 240
 सहयोग राशि **मनीआर्डर** से नीचे लिखल पता पर भेजल जाव-
श्रीमती सीमा मिश्र
संपादक, सँझवत,
2/6 जी.पी. रोड,
पार्वती कंप्लेक्स (प्रथम तल),
पार्वती नगर, पो. बंगाल एनेमल,
जि. नार्थ 24 परगना (प. बंगाल)
पिन - 743122
भा **पेटीएम** से हे नंबर पर भेजल जाव-
9113236529 (Paytm No.)
 संदेश का स्थान पर पत्राचार के आपन सुस्पष्ट पता पिन का सङे लिखल जाव।
सीमा मिश्र
(प्रकाशक)

फायदा होई त बदलाव अइबे करी- नारायण दुबे

फिल्म कथाकार अउर हिंदी आ भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार नारायण दुबे से डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के एगो अंतरंग बातचीत

होली मिलन का अवसर पर जगदल (कोलकाता) में आयोजित एगो कवि सम्मेलन में फिल्म आ रंगमंच से जुड़ल एगो वयोवृद्ध बाकिर आज भी कुछ करेके लालसा से भरल पूरल हस्ती से परिचय भइल। अगिला दिन हम उहाँ से मिले गइलीं आ फिल्म आ रंगमंच का अलावे जीवन आ जगत के कई महत्त्वपूर्ण बिंदुअन पर भी बात भइल। आँखिन पर बड़हन चश्मा, एक काठी के देंहि, ऊपर मिहें बिखरल सफेद बार, हर बात में तर्क के जबर्दश्त पुट, अनुभव के धनी वाणी जइसे कवनो सूत्र होखे,गंभीर चर्चा में भी तरोताजा मुस्कराहट, शालीन व्यवहार के धनी जवना व्यक्तित्व के चरचा करे जा रहल बानी ओकर नाँव ह श्री नारायण दुबे। 1944 में जनमल श्री दुबे के सुरुए से रंगमंच में रुचि रहे। इहाँ के दर्जनों नाटक लिखलीं आ ओकर मंचन करवलीं बाकिर विशेष ख्याति मिलल फिल्म 'छठि मैया की महिमा' से। ई फिल्म रिलीज भइल 1979 में, जवना में ओह घरी के स्थापित कलाकार लोगन के जबर्दश्त भूमिका रहे। ओमें बी.एम.व्यास, मनीष कुमार, साहू मोदक, राजेन्द्र नाथ, बीरबल, गायत्री आ असित सेन आदि अभिनेता लोगन के अभिनय के बहुत सराहना कइल गइल। गीत लिखले रहीं प्रदीप जी आ पार्श्वगायन लता मंगेशकर, आशा भोंसले, उषा मंगेशकर, महेंद्र कपूर आ विंध्यवासिनी देवी के रहे। ओमें संगीत देले रहीं डॉ. भूपेन हजारिका जी। एह फिल्म के निर्माता रहीं महुआ डे आ निर्देशक तपेश्वर प्रसाद जी। ई फिल्म आर्थिक रूप से सफल रहलि बाकिर जवन खुशी लेखक के मिले के चाहीं ऊ ना मिल पावल काहेंकि फिल्म के पटकथा के ओह समय के हिट फिल्म 'संतोषी माता' के रूप दे दिहल गइल रहे। हमरा पहिलका स्क्रिप्ट पर फिल्म बनल रहित त हमरा विश्वास में निर्माता लाल हो जइते आ हमहूँ हरियरा जइतीं। खैर जवन भइल तवन ठीके भइल।

एकरा बाद टेलीफिल्म 'बागदा' काफी चर्चा में रहल। एकर पटकथा

दुबेजी लिखलीं बाकिर इहाँके नाम खाली संवाद लेखक का रूप में प्रदर्शित भइल। दिल्ली दूरदर्शन खातिर एह फिल्म के भी निर्देशक तपेश्वरे प्रसाद जी रहीं। एह में बंगला आ हिंदी फिल्मन के स्थापित अभिनेता अनिल चटर्जी, श्यामानंद जालान, सुप्रिया देवी, अशोक सिंह आ शालिनी कपूर के मुख्य भूमिका रहे। दुबेजी कोलकाता दूरदर्शन खातिर भी कई गो नाटक लिखलीं। एहमें हिंदी में 'जहर' आ 'दहशत' के काफी लोकप्रियता मिलल। 'दहशत' नाटक में इहाँका लेखन, अभिनय आ निर्देशन तीनों भूमिका में रहीं। भोजपुरी के अँजोर, डाइन आ 'उड़ल चिरैया' तीनों नाटक काफी चरचित भइले सन; ईहो कोलकते दूरदर्शन से प्रसारित भइल रहले सन।

नाटक के शुरुआती दिनन के चरचा करत दुबेजी भावुक हो गइलीं। इहाँके सबसे लोकप्रिय नाटक रहे 'आग' जवन बहुत कम उमर में लिखले रहीं, एहीसे दुबेजी ओकरा के परिपक्व (मेच्योर) ना मानींले। फेरु त इहाँके 'अमर वरदान' (पौराणिक नाटक), 'रक्त स्नान', 'दुर्लभ मक्खी' आदि नाटक एक-एक करके इहाँ का लोकप्रियता में इजाफा करत गइले सन। अपना नाटक 'दुर्लभ मक्खी' के चर्चा करत दुबेजी हँसे लगलीं। एह नाटक के जहिया मंचन होखेके रहे ओ दिन एकर अभिनेता श्याम के अपना के अभिनेता बतवला का बादो कला मंदिर (कोलकाता) के सेक्यूरिटी गार्ड गेटे पर रोकि देले रहे। जब दुबेजी आ निर्माता दूनो जना जाके बतवलीं सभ, तब जाके ऊ भीतर ढुके दिहलसि काहेंसे कि श्याम जी के चेहरा-मोहरा अभिनेता के ना लागत रहे। बाद में ईहे श्याम कोलकाता के एक नंबर के हास्य अभिनेता भइले। एतना कइला का बाद भी दुबेजी अपना लक्ष्य से बहुत पीछे रहीं आ आज भी इंतजार बा कि कवनो उपयुक्त निर्माता उहाँके जरूर मिली जे इहाँके पटकथन पर फिल्म बनाई। बातचीत का पहिल दौर तक दुबेजी का पास चार गो स्क्रिप्ट रहे, दू गो हिंदी आ दू गो भोजपुरी में आ रचनात्मक कार्य त ओइसहीं जारी बा। बाद में उहाँका 'बीडिओ साहब' स्क्रिप्ट पर 2017 में भोजपुरी फिल्म बनल, जवन काफी लोकप्रिय भइल।

बिहार का सीवान जिला के कोथुआ सारंगपुर में जनमल नारायण दुबेजी कोलकाता के जगदल में रहिके आजु पहिले से भी अधिक मनोयोगपूर्वक स्वाध्याय में रत बानी। कविता, कहानी, नाटक आदि विधन में दुबेजी के सैकड़ो रचना पत्र-पत्रिकन में छप चुकल बाड़ी सन आ आकाशवाणी से प्रसारित भी भइल बाड़ी सन। कला संसार, चुटकी,

हर्षिता, बंगाल मेल आदि साप्ताहिक पत्रिकन के इहाँका बरिसन तक संपादन कइले बानी। उमेदि करेके चाहीं कि उहाँके साधना के जल्दिए कवनो नीमन मोकाम हासिल होई।

1. हम काफी जिज्ञासु हो गइल रहीं। **आखिर बात का रहे कि अतना सक्रिय रहला का बादो, संघर्ष कइला का बादो रउआँ लक्ष्य का एगो बेहतर मुकाम तक ना पहुँच पवलीं ?**

बाते बात में दुबेजी अपना आगे ना बढ़ेके कारन बतवलीं जवन बिल्कुल सही लागल। इहाँका पश्चिम बंगाल का वाटर वर्क्स डिपार्टमेंट में स्थायी रूप से कार्यरत रहीं, एहसे स्वतंत्र रूप में काम करेके मोका ना मिलल। नौकरी छोड़ेके खतरा जो उठा लेले रहितीं त शायद स्थिति कुछ अउर रहित। अपना स्थिति के बयान एगो कथात्मक रूप में करत उहाँका कहलीं-

"हम एगो घोड़ा हईं आ हमरा पीठ पर समय एगो लाठी में संभावना के पोटली लटकवले बा। घास बराबर हमरा सामने रहल बिया बाकिर कबहूँ मिलल ना। तेज भी चलीं त हमरा आ घास का बीच में समय हमेशा से दूरी बनवले रहल बा। समय हमरा के धोखा देत रहल बा। कबो-कबो हवा के झोंका आवत रहल बा आ घास के पोटली लगे आ गइला से हमरा एकाध गवत भेंटात रहल बा, एह से रुचि आ अभिलाषा बरकरार रहल बा।"

2. **पिछला दस-पनरह बरिस से भोजपुरी संगीत के त बहुते खराब स्थिति हो गइल बा। अश्लील बनाम फूहड़ बनाम गंदा गीत भोजपुरी समाज के नवहन के खूब गुदगुदा रहल बा, उत्तेजित करे लागल बा आ एह पीढ़ी के नीमन-बाउर के पहिचान कइल अब पसंद नइखे रहि गइल। एक ओरि जहाँ फूहड़ गीतन का धुन पर भोजपुरिया नवही मन भर थिरकत लउकत बाड़न ओहिजे एगो वर्ग अपना संस्कृति का सुरक्षा के चिंता करत लउकऽता। रउरो मन में एह दिसाईं कुछ जरूरे चलत होई।**

आजु का भोजपुरी संगीत में फूहड़ता के बढ़ोत्तरी बहुत चिंताजनक बा। एकर असली पता ओकरा के देखिके चल सकऽता जे भोजपुरी क्षेत्र से बाहर रहऽता। ऊ लोग भोजपुरी बोले से बचऽतारे। आखिर ऊ काहें डेरातरे भा शरमातरे ? ई जानल भी बहुत जरूरी बा। इहाँका मानतानी कि भोजपुरी गायक आ गीतकारन पर नियंत्रण जरूरी बा। हॉलाकि सच त ईहो बा कि फूहर गीत गावेवाला आ लिखेवाला दूनो प्रतिष्ठित साहित्यिक परिवार से ना होला। जे साहित्यकार होई, ऊ फूहड़ता के पोषक ना होई, समाज के अहित पहुँचावेके कोशिश ना करी। एह तरह के लेखन आ गायन अर्थलोलुप कलाकारन के काम

ह। भोजपुरी समाज के संस्कृति खातिर वर्तमान काल संकट के काल बा। एह तरह के गतिविधियन पर अंकुश लगावल जरूरी बा। हालाकि हिंदी के बाद भोजपुरिये फिल्मन के चानी कट रहल बा। तबो ई एगो अच्छा लच्छन बा कि अच्छा कलाकार लोग के अच्छा दर्शक के कमी खलता।

सङहीं एहू विषय पर सोचल जरूरी बा कि फूहर गाना हर भाषा में बा, बाकिर बदनाम भोजपुरिए बा। काहें ?.......एकरा पर बहस कइल बहुत जरूरी बा, ना त भोजपुरी समाज आ संस्कृति सभके उपेक्षा के शिकार हो जाई।

3. छोट से छोट भूभाग में बोलल जाएवाली भाषा के भी नाँव संविधान का आठवीं सूची में दर्ज हो चुकल बा। भोजपुरीभाषियन के संख्या त बहुत बा आ अलग-अलग बैनर का तले एह बदे संघर्षो खूबे कर रहल बा लोग बाकिर अबहिंयो कवनो सुमगुम नइखे लागत। रउआँ का लागता, अबहीं कतना देर लागी ? हमनी का ओर से कमी कहँवा हो रहल बिया ?

अलग-अलग बैनर में राजनीति ढूकल बिया आ राजनीति का एकता से बेसी फूट पर विश्वास होला। एक साथ गरजी त आसमान दहलि जाला। अकेले शेर के दहाड़ भी ओतना असर ना करे। एहसे देर त होखबे करी।

4. भोजपुरी क्षेत्र में रामलीला आ रासलीला आजुओ लोकप्रिय बाटे। पौराणिक कहानियन पर आ हिंदी माध्यम भाषा में नाटक के मंचन खूब होखेला बाकिर भोजपुरी का नाँवे सुनत लोग लरुआ जाला। काहें ? भिखारी ठाकुर का टाइम में त उनुकर नाटकन के बड़ा शोर रहे। आजु का हो गइल बा ? भोजपुरी में सुबहित लिखातो नइखे। या त अनुवाद होता ना त छिटपुट प्रतिबद्ध लेखक लोग लिखत लउकतारन। ऊ जागरूकता भा उत्साहो नइखे लउकत जवना से रचना के जमीन लहलहाए लागे।

परिवर्तन प्रकृति के शाश्वत नियम ह। परिवर्तन से घबराए के ना चाहीं। परिवर्तन के शुभ माने के चाहीं बाकिर संतुलन पर नजर राखे के चाहीं। संतुलन सृष्टि ह आ असंतुलन संहार ह। एह विषय पर अकेले चाहे छोट जगह से काम ना चली। ए पर अभी काफी विचार -मंथन जरूरी बा।

5. भोजपुरी में कवि लोग के त बाढ़िए बूझीं, ओने कावर कवनो चिंता नइखे लउकत बाकिर गद्य आ खास करके आलोचना का क्षेत्र में बहुत कम लिखा रहल बा ? एकरा पाछा का कारन बुझाता आ कइसे ओकरा के दूर कइके पहिलेवाली स्थिति के बहाल कइल जा सकता ?

गद्य आ आलोचना के अभाव पहिलहूँ रहे। अबो रही, काहें जे एकर पाठको

लोग कम महङा नइखे। धीरज त धरहीं के परी। ई सिकाइति सभ भाषा के बा।

6. भोजपुरी का बढ़ंती खातिर रचनाकार, सरकार आ आम आदमी के का करेके चाहीं ?

सरकार त ऊहे करेले जवना के करे खातिर मजबूर होखे। रचनाकार के काम बा खूब लिखो। आम आदमी के काम बा कि खूब पढ़ो। पढ़ले से अभ्यास होई। भोजपुरी में दर्शक आ श्रोता के कमी नइखे, बाकिर पाठक के कमी बा। पाठके के कमी भोजपुरी के सबसे बड़ कमजोरी बा।

7. भोजपुरी के भविष्य कइसन बा ? आजु-काल्हु गार्जियन लोगन से अपील कइल जा रहल बा कि अपना बच्चन के इंटर, बीए आ एमे में भोजपुरिए विषय रखवावल जाउ। कई तरह के फयदो गिनावल जाता। का लागता, लोगन का रुचि में कुछ बदलाव आई ?

फायदा होई त बदलाव अइबे करी।

8. हिंदी का विकास में एगो बड़हन भूमिका भोजपुरी क्षेत्र का लेखक लोग के रहल बा जे भोजपुरी छोड़ि के हिंदी में लीखल आ आजुओ लिख रहल बा। अब त एगो नया फैशन हो गइल बा हिंदी के नुकसान का तर्ज पर भोजपुरी के बिरोध के। हमनी का त आजुओ ई बुझाला कि हिंदी देश-विदेश में अपना बल-बूते बढ़ रहल बिया बाकिर कुछ लोग महसूस करता कि जो भोजपुरी संविधान का आठवीं सूची में दर्ज हो जाई त हिंदी फेन फेंके लागी। रउआँ का लागता कि हिंदी भोजपुरिए से टिकल बिया आ एकरा जाते ई बदहाल हो जाई ?

एतने ना, कुछ लोग त क्षेत्रीय भाषा के बढ़ंती का समर्थन के हिंदी के लक्ष्य तक पहुँचे का रास्ता में बाधा का रूप में देख रहल बा। ई त मानहीं के परी कि भोजपुरी के संख्या बल हिंदी खातिर एगो बड़के सहारा बा। भोजपुरी के समर्थन हिंदी से हटला से अउर कई गो भसन के समर्थन हट सकेला। ई एगो गंभीर मसला बा। एकरा पर गंभीर विचार जरूरी बा।

9. भोजपुरी के मानकीकरण अबहीं ले नइखे भइल आ निकट भविष्य में अइसन कवनो उमेदियो नइखे लागत। एह स्थिति में कइसे एकर भाषायी विकास होई ? एकरा खातिर का कइल जाएके चाहीं ?

तत्काल लिखे-पढ़े पर ध्यान देबेके चाहीं। खूब लिखाई-पढ़ाई त मानकीकरण के रास्ता आसान हो जाई।

भोजपुरी पढ़ल जाउ, लिखल जाउ।

डाइन

तुषार कांत उपाध्याय

ओह दिन घर में तूफान आइल रहे। सभे केहू फिकिर में, आ अपना -अपना हिसाब से एह आफत से बाँचे के जोगाड़ में। मइया, माई, दिदिया, जेकरा जवन बुझाव ओही आधातिम में लागल। केहू झोंटा दाई के गोहरावत, केहू लाल मरिचा से धुँआ करत त केहू बरमेश्वर बाबा के एक किलो गुरही मिठाई चढ़ावे आ भरि सावन जल ढारे के भाखत।

"ई ढीठ संतुवा जवन ना करे। कतने बेर एकरा के धिरावल गइल, बाकी माने तब नू ? जबो कारी मइया घरे आवेली, एकरा के कोठरी में लुकाए खातिर धिरावल बा। एह बेरा देखीं ! उनका कोरा में बइठि के चिउरा-गुर फाँकि आइल बा। ई दइब। अब तू ही रइछा करिह। मइया खीसि में आ डेराइल कूल्ही देवी-देवता के गोहरावे में लागल रहली आ संतुवा कोना में चुपचाप, घुईश लेखा लगवले खाड़ रहे।

कारी मइया। इनिका के सभे केहू एही नांव से जानेला। खूब लाम लहकार, बड़-बड़ आंखि, खिचड़ी लेखा आधा पाकल लमहर केश आ बीच में भरल लाल सेनुर। कारी मइया के असली नाव केहू के मन ना परे आ कवनो बहू के नाव होला कहाँ ? ऊ त केहू के माई, केहू के पतोह त केहू के मेहरारू, भउजाई होके रहि जाले। त कारी मइया के लोग उनका एगो नाँव से जाने, ईहो कम ना रहे। एह नाँव, एह पहचान के कारन रहे। सउँसे गाँव काना-फुस्सी में कहे कि कारी मइया कुछ सिद्ध कइले बाड़ी। उनका जादू टोना आवेला।

"कतना करिया बाड़ी! आ उनकर अँखिया कतना लाल–लाल रहेली स।अइसने करिया मेहरारू टोनहिन होली स।"

भरल-पुरल परिवार। तीन-तीन गो पतोह, नाती-पोता। बेटिन के बियाह हो गइल रहे आ ऊहो कूल्ह लरकोरी रहली स। आ घर सम्हारे खातिर उनुकर छोटकी विधवा गोतिन फूला, असली मलिकाइन घर के। कवनो जिम्मेवारी ना, ना कवनो काम। त जबे मन करे केहू के घरे चलि जासु। कारी मइया के आत्मा बसे लइकन में। बाकी ऊ जेकरा घरे जासु, लोग अपना बेटा-नाती के लुकवावे लागे। बेटी-नातिन खातिर कवनो ढेर फिकिर ना रहे। ऊ त अइसहूँ अनगराहित होली स। संतु के घरे ईहे हाल रहे। घर के लोग कारी मइया से काल लेखा काँपसु। उनका अइला प संतु के घर का भितरी लुकवावे के कूल्ही जतन

करस आ संतु के कारी मइया के आइल बड़ा नीक लागे। कारी मइया के कोरा में चढ़ि के बइठस। संतुवो खातिर कारी मइया जान छिरिकस। उनका फाँड़ में कुछ ना कुछ संतु खातिर जरूरे रहे। लमंचूस, लाई, अमरूद कुछुवो। धीरे से संतु के हाथ में आ फेर संतु ओतने चुपके से मुँह में। सब चुपचाप, मइया-संतु दूनो खुश। बाकी आजु त संतु पकड़ा गइल रहले आ घर में आन्ही तूफान आ गइल रहे। संतु के बाबूजी कतनो समझावे के कोशिश कइले, बाकी सुनेवाला के रहे। "ई मरदन के बुझाला कुछुवो ? जइसन बाप ओइसन बेटा।" संतु के मइया संतु के बापे प खिसिया गइली।

कारी मइया के डाइन होखे वाली बात त सिपाही बाबा अपनहीं बतवले रहले। मँगरू से कानाफूसी में। आ मँगरू त हवे गाँव भरि के नारद जी। अब त सउँसे गाँव मानेला। गाँवे का, जवारों में लोग जानेले एह बाति के। सिपाही बाबा, कारी मइया के मरद। गाँव-जवार उनका के एही नाम से जानेला। खूब गोर, लाम-लहकार, कसरत कइल देह, जइसे उमिर के कवनो असरे ना होखे। पाँच गो बियहल-गवनल बेटा-बेटी के बाप बाकिर फुर्ती में कवनो नवहा से आगे। सुरुज भगवान के निकले से पहिलहीं गाँव के बुढ़वा शिव जी के धो-पोंछ के जल-बेलपत्र चढ़ावत जोर-जोर से बम-बम चिचियास, जैसे शिव जी के सुतला से जगावे खातिर आइल होखसु आ गाँव भरि के मालूम हो जाए कि सिपाही बाबा गाँवे छुट्टी आ गइल बाड़े।

दुपहरिया भर गाँव के लोग उनका बड़का गो दुवार पर जुट जाइ। सिपाही बाबा अपना सिपाही वाला नोकरी के कूल्हि कहानी, निमक-मिरिच लगा के सुनावस। खास क के बड़की लड़ाई के किस्सा, जब उनुकर जहाज इंग्लैंड के बन्दरगाह पर लंगर डाल के खाड़ रहे। "सातो आठ बरिस के लड़िका-लड़की सब अंग्रेजिए में बतियाता था आ इहँवा देखिए, मैट्रिक पास कर गए बाकी अग्रेजी के नाँव पर कपार टोवे लगेंगे। पता नहीं का पढ़ने जाते हैं स्कूल में ?" अपना सिपाही वाली खड़ी बोली में बच्चन के लजवावसु।

त उहँवा के लइका–लइकी भोजपुरी बोल लेले का ? आज संतु मन कठेठ क के पूछिए लिहले।

“भाग ससुरा कहीं के। मुँह लड़ाता है, आवे दो अपना बाप को।” हँसत सिपाही बाबा लाठी पटकत भगवले संतु के।

सिपाही बाबा के केस लड़े में बड़ा मन लागे। जे दु चार किता केस ना लड़ल ऊहो कवनो मरद ह का? अपना अइँठल मोछी प ताव देत अइसे बोलसु

जइसे आल्हा-उदल के किस्सा से जादा बहादुरी आ चतुराई के कहानी होखे। वकील से कइसहूँ गिड़गिड़ा आ हाथ जोरि के वकालत के फीस कम करा लिहल उनका आपन चतुराई लगे। जज साहब लोगन से अपना छोट नोकरी आ बड़ परिवार के दुहाई देके, निरीह आदमी लेखा गोड़धरिया कइल आपन बुद्धिमानी लागे। गाँव भरि के लोग उनका के काबिल माने, उनकर इज्जत करे। बाकी साँच कहीं त भितरे-भीतर डेराइ। के लागे एह लंगा से। एह सवङ्गर आ झगरालू खनदान से अझुराए से जतना होखे बाँचे के फेर में रहे। लोग पीठ पीछे का बतियावता, एकर फिकिर केकरा रहे।

सिपाही बाबा के जवान छोट भाई जवार में फइलल हैजा में अकाल मरि गइले। भाई के गुजरला का बाद उनका मेहरारू आ लइका-लइकिन के अपना से अधिका मान, इज्जत आ अधिकार देके रखले। उमिरि में उनका से पनरह-सोरह बरिस छोट विधवा के कवनो तकलीफ ना होखे, केहू उनकर मान कम ना करे, एकर ध्यान हमेशा राखल जाई घर में। सिपाही बाबा त बहुरिया के सनेह से नावे से बोलावसु। फूलकुमारी, फूलो।

जब कबो गाँवे अइला प सिपाही बाबा के तबीयत खराब हो जाई त फूलो उनकर खियाल रखे खातिर राति-राति भरि सेवा करसु। कबो-कबो सिपाही बाबा के अधिका थकान भइला पर तेल के कटोरी लेके होते भिनुसारे तेल लगावे दलानी में चलि आवसु। देरि ले उनकर सेवा करसु तबे ऊ दिशा-मैदान होखे आ नहाए निकले के मन बनावसु। फूलो अब कबो-कबार सिपाही बाबा के नोकरी वाला जगहो पर चलि जाली आ महीनन रहि के आवेली। शुरू-शुरू में त कारी मइया भरि जोर कोशिश कइली कि ऊहे सेवा करिती, ऊहे उनका सङे बहरा जइती बाकिर उनका के डाँटि के चुप करा दिहले "इनिका मन ना लगे सेवा करे में। फूलो कवनो काम मन से करेली।" छोट भाई का मेहरारू से सेवा करावे प कई लोग घर के भीतर-बाहर दबले जबान में बिरोध कइल बाकिर उनका आँखि के ताव बरदास ना करे पावल।

संतु के राति-बिराती कहूँ जाए में डर ना लागे। कबहियों उठि के खेते-खरिहाने चलि जाला। माघ-फागुन के दिन। दँवरी खतम होखे के आइल। गाँव भरि के लोग खरिहाना में सूते अनाज के अगोरिया करे खातिर। भोर के सिहिरावत हवा में संतु मुँह अन्हारे चलि दिहले खरिहाना में अपना बाबूजी किहाँ। आसमान पर अबहीं ले चान-तारा के चदरी बिछले रहे। रास्ता में बुढ़वा शिवजी का चउतरा पर दू गो हिलत–डोलत

मूर्ति के देखि के पहिले त उनका भकसावन लागल बाकिर जरी पहुँचत ऊ चीन्हि गइले सिपाही बाबा आ फूलो मइया के।

"आखिर कतना दिन छिपी ई गाँव का नजर से !" फूलो मइया आपन पेट देखावत कहत झुझुआत रहली।

"पहिलहूँ त कई बेर भइल बा। ठीक हो जाई। घबड़ात काहें बाड़ू ?" सिपाही बाबा धीरज बन्हावत फुसफुसा के कहले। तबे उनकर नजर संतु प परल। ओकरा के जल्दी खरिहाना जाए खातिर डाँटत जोर-जोर से अलख जगावे लगले- बम बम बम बम।

सिपाही बाबा आ फूलो मइया ओही दिने पहिलका पसिंजर ध के बहरा चलि गइल लोग, उनका नोकरी वाला जगहा प। ओही दिन कारी मइया खोंइछा में कुछ चोरवले संतु के खोजत खरिहाना आ गइली। खरिहान में एगो अनाज के बड़हन राशि का जरी संतु के लेके बइठि गइली।

"ऊ लोग तीन-चार महीना के बाद आइल। तहरा फूलो मइया के तबीयत खराब हो गइल बा।" भोर वाली बाति बतवला पर अतने जबाब देके आसमान निहारे लगली। आँखि में जइसे कुछ परि गइल होखे। आँखि लोराए लागल रहली स।

"मइया, तोहार अँखिया अतना लाल काहें रहेली स ?" संतु आज पूछिए लिहले।

"तहरा ना बुझाई बाचा। जब करेजा जरेला त धुँआ ना नु उठेला। सीधे अङार बनि के अँखिया से टपकेला। पेट के गड़हा त अनाज से भरि जाला बाकिर मन में भीतरघँवे लागल एह अपमान के चोट से करेजा धधकत रहेला। निनिए ना लागे रे संतु !"

"अच्छा बताव संतु, तू खेले जा आ कूल्ही लइका तहरा के देखते खेलले बंद क द स, त तहरा कइसन लागी ?" ई सोचिए के संतु के मन रोवे-रोवे हो गइल।

"हम जानेनी, सउँसे गाँव-जवार हमरा के डाइन-टोनहिन कहेला। लोग हमरा से अपना घर के लइकन के लुकवावेला। हम सब जानेनी। बाकिर का करीं ? जब आपन मरदे आपन स्वार्थ साधे खातिर एह काजर के कोठरी में धकेलि देउ त ?" पता ना ऊ संतु से कहत रहली कि अपना आपे से बतियावत रहली। कारी मइया के आँखि से लोर बहे लागल रहे। मुँह में आँचर दाबि के फफके लगली। संतु के कठेया मारि देले रहे। बेकारे पूछि देनी हा। आँखि लाल रहे त रहे।

"हम करिया बानी आ बुढ़ा चलनी। तहार फूलो मइया गोर, सुन्नर आ अबहीं जवान बाड़ी।"

'त का हो गइल एकरा से ? एह से तू डाइन कइसे हो गइलू ? संतु कारी मइया के अँकवार में बान्हि के उनका सङहीं सुबुकि-सुबुकि के रोवे लागल।

लघुकथा

मुँहनोचवा

केशव मोहन पाण्डेय

बात 2002-2003 के ह। देश के अलगे-अलगे कोना में एगो जीव के चर्चा रहे। लखनऊ-गोरखपुर, सीवान-छपरा से ले के गाँवो-देहात में साँझ के अन्हरिया झोहते ओह जीव के भय सबके मन में पइसे लागे। लोग के मन में एतना डर रहे कि केहू दिसो-फराकी करे बिना टार्च, ढिबरी आ लालटेन के ना जाव। अचरज त ई रहे कि सबके करेजा में आपन डर भरे वाला ऊ मुँहनोचवा कहीं लउकबे ना करे। पता ना कहाँ से आवे आ झपट्टा मार के मुँहवे नोच ले जाव।

कातिक के साँझ तनी उमस से भरल रहेला। मकई के खेत में मचान के नीचे गोइँठा के आगि पर गनपत बाल होरहत रहले। खेत के पुरुबवार कोना में कुछ खुरखुराइल। सुनले त उनकर कान खड़ा हो गइल। लागल कि जरूर कुछ बा। जागरूक हो गइले। जागरूकता के चेतना वाला मन के डरो डेरावे लागल। 'कहीं मुँहनोचवा त ना ह ?'

खुरखुरइला के आवाज आहत गनपत एक-एक डेग बढ़ावत गइले त देखले कि कवनो लइकी बाल तुरतिआ। ओकर पीठ उनका ओर रहे आ पीठिआ पर ओकर करीका बाल लहरात रहे। सोचले कि आज त खेत के पहरेदारी के फल मिल गइल। आज चोर पकड़ा गइल। पीछे से ओकरा के भर अँकवार पकड़ले कि ऊ लइकनिया एक्के झटका में अपना के छोड़ा लेहलस आ गनपत के मुँह पर एक झपट्टा मार के भाग गइल। ओकरा नोह से गनपत के मुँहवा नोचा गइल रहे बाकिर ऊ चीन्ह लेहले कि ऊ उनकर चचेरी बहिन चंचलिया रहे।

लोग जानित त का कहित। गनपत के साँच बोल के एगो लइकी के बेभरम कइला से अच्छा झूठ बोल के ओकर मान बचावल लागल। से लोग के पुछला पर परपरात मुँह पर भाप देत कहले- "अरे मुँहनोचवा हमार मुँह नोच लिहलस रेऽऽ।"

अंक के छंद / सवैया

कन्हैया प्रसाद रसिक

1

मोर पिया परदेश बसे
घर घात लगाय लखे हुरियारा।
हम तरुनी तपलीन हिया
खल खैंचत बान चले बरियारा।
गात सघात बयार करे
रितु घातक मास लगे भठियारा।
हेह दिना यदि कंत नदारत
धाय वसंत चढ़े मुड़ियारा।।

2

झूठ परोसत सान बढ़े त
अकास मधे चरखा चलवाईं।
खेतन में अवनी असमान
समुंदर पैप सदा डलवाईं।
भोजन ला जब सोर मचे
तब काक-कुमार मुड़ेर बिठाईं।
आन्हर आँख गुड़ेर कहे
छन में सभ काम कठोर कराईं।।

3

कंत बसंत अनंत कथा
सजनी रजनी बनि गैल बिघाती।
अंग अनंग करे नखरा
तन होखत बा सरकंड सँघाती।
डाल हिंडोल लली सुकली
लखि देह बने पुरईन क पाती।
काँपत नार समेटत आँचर
ओट करी उसुकावस बाती।

4

एक बिसातिन औसरि पा
बृखभानु सुता गृह जा सकराहें।
साजि समान सुहागिन के
बिछिया बिनुली कजरा करियाहें।
बूझत हाल सनेह सने
सुर नैन नचा इचि रूप सराहें।
जानि क कान्ह क भेद अहीरनि
हाथ करेज निकासत आहें।

5

साँवर रूप अनूप छटा
लखि बान प्रसून चुभे हियरे में।
धा ललिता घर भीतर जा
कहली चुरिहारिन हौ नियरे में।
नाकि क कील कटाह लगे गर
मोतिनहार गड़े हियरे में।
मंथर चाल चले कटि खीन
जनी गदरी निखरी उपरे में।

एह अंक से छांदस कविता के एगो स्तंभ शुरू कइल जा रहल बा। हर अंक में एगो अलग छंद में कविता प्रस्तुत होई। रचनाकार लोगन से सादर रचना आमंत्रित बाटे।

अगिला अंक के छंद - **दोहा**। - संपादक

अंक के छंद / सवैया

संगीत सुभाष

1
डारि अचानक रंग सखी छुपले हरि हेरत
आँखि पिराला।
ओट धरे लखि खोर मधे सभ घात लगा
टुटली ब्रजबाला।
धाई धई बहियाँ मिलिके जबरी
मलि छीनि अबीर गुलाला।
नैन तरेर रिगा कहली अबगे
हरि रूप भये नँदलाला।

2
बाँह गही सुनरी एक ग्वालिन
देत हँकार सखी सब आ री।
काल्हि मले मुख ऊपर रंग
त आजु सभे मिलि अंग लगा री।
धूरि गुलाल अबीर लभेर
न लालन से इचिको शरमा री।
बानर रूप बनाई क पूछ
कि काल्हि तरे अब गावसु गारी।

3
जेकर आगम जानि हिया
हरसे तन माँहि उमंग समाला।
जीव सभे अगुवानिहिं में बनि के
ठनि के रहिया बिछि जाला।
पादप माँथहिं बान्ह क पाग
खड़ा मग लेइ अनेकन माला।
पूछत लोगन केइ हवे त
बतावत नाम बसंत कहाला।

4
ठाढ़ भई लतिका तनि के
अबले रहली धरनी छितरा के।
मोंजरि आम क डाढ़िन डाढ़िन
फूलन से बगिया गदरा के।
लाल गुलाब की आँखिन से
मदिरा टपके हुलसे इतरा के।
कोइलि तान सुनावति बा
चहुँ ओर बसंत चले इतरा के।

5
बाहर के तम दीप जरावत
भागत नाहिं दिखात दुआरे।
भीतर के तम मेंटत ना
मइया बिन तोरि कृपा व दया रे।
शेष, महेश, खगेश, गनेश,
दिनेश तबै नित पाँव पखारे।
जोरि क हाथ, नवाइ क माथ,
खड़ा हमहूँ निज जोति दिखा रे।

कविता

गीत

सपना-सपना आँख भइल बा
मन बा भरत उड़ान
जिए के आस बन्हाइल।

भोर किरिन में रूप सजा के
नयनन के दुअरा से झाँके
तन-मन में गुदगुदी जगा के
पंखुरिया तितली के टाँके

सरधा भइल जवान
राग में साँस रंगाइल।

मरुथल मन में भरल समुंदर
डूब गइल पर्वत पिआस के
उगल पाँख मरुआइल मन के
बिचरे मन-पंछी अकास के

पसरत गइल विहान
जोत के चुनर तनाइल।

जबसे उतरल बा अँखियन में
सतरंगा सपना-बरिआती
मन-अँगना में शोर मचल बा
अगराइल बा आँतर-छाती

कोइली छेड़े तान
आम-गछिया मोजराइल।

गजल

मरियल के का मारब जी
सूखल के का गारब जी

अपने में जब बाजी बा
का जीतब, का हारब जी

लालच के लुकवारी से
कबले घर के जारब जी

महँगाई के आन्ही में
कइसे दीया बारब जी

छल के तोपा-ढाँपी में
कतना गेरुआ धारब जी

नइये में जब छेदा बा
कइसे पार उतारब जी

अपना करिया करनी से
कबले पल्ला झारब जी

सतीश प्रसाद सिन्हा

कविता

गीत

दिनेश पांडेय

झुरवन महुइया के
अनपत गछिया, ए री सखी!
फुलवा चुएला अधरतिया, ए री सखी!
अगतहीं जनतीं जे
पिय बउरहिया, ए री सखी!
बिरई में अगिया लगइतीं, ए री सखी!

गुपचुप मुँडेर चढ़ि
चपल चनरमा, ए री सखी!
अँजुरिन बिखेरे गजमुतिया, ए री सखी!
भलहीं बिरह जारे
तनमन छरिया, ए री सखी!
रहिबों सजन दुलरइती, ए री सखी!

झिरझिर पुरवा बहे
सरकल अँचरा, ए री सखी!
ताना कसे ननद लहुरिया, ए री सखी!
अगतहीं जनतीं जे
मध मधुमसवा, ए री सखी!
ननदी के पीहर पठइतीं, ए री सखी!

सपना के डहुँगी में
अँकुरल टुसिया, ए री सखी!
भँवरा करेले उतपतिया, ए री सखी!
अगतहीं जनतीं जे,
निफल ह सपना, ए री सखी!
खुले नैना रयनि बितइतीं, ए री सखी!

असरा क पाँखि थकल
पातल देहिया, ए री सखी!
पइतीं अलम त सुहुतइतीं, ए री सखी!
अगतहीं जनतीं जे
बलम नियरवा, ए री सखी!
बनि के सुगंधी लपटइतीं, ए री सखी!

——————

निहोरा

'सँझवत' के जुलाई-सितंबर, 2019 अंक रउआँ सभ का सोझा प्रस्तुत बा। कइसन लागल, जरूर बताइबि सभे।

कविता

कजरी

गजल

जवाहर लाल 'बेकस'

तीर बेधत निकलिये गइल
जान अखड़ेरे चलिये गइल

आग ले दोस्ती का भइल
घर फतिंगन के जलिये गइल

आदमी आदमी ना रहल
लोग अतना बदलिये गइल

पी के गिरला ले का फायदा
जबकि गिर के सम्हलिये गइल

ओह गजल के बसल याद में
उम्र बेकस के ढलिये गइल

गीत

पंकज तिवारी

मन लहकता कूदीं परधानी में
का बा जजमानी में ना।

मारि सेंट छिड़काइबि
एगो बूलेरो ले आइबि
टुटही सइकिल से मन बा परेशानी में।
का बा जजमानी में ना।

काहें सीधा गठियाईं
पेन्हबि सूट बूट टाई
नाहीं रहबि घरे रहबि रजधानी में।
का बा जजमानी में ना।

करीं सबके पूजा-पाठ
रुपिया मिले गिन के साठ
अब ना रुपिया के रहब परेशानी में।
का बा जजमानी में ना।

रही दुलहिनो के राज
साड़ी गहना साज बाज
नाहीं कमी रही ठाट-बाट शानी में।
का बा जजमानी में ना।

सइयाँ, सजना ,बलमा

मार्कण्डेय शारदेय

लोकगीतन में सइयाँ, सजना आ बलमा के अधिका प्रयोग लउकेला। एह शब्दन के अतिरिक्त अउरो शब्द बाड़ें; जइसे- राजा/रजऊ, पिया/पियवा आदि। बाकिर ई तीन शब्द पुरुष में नारी-वांछित समस्त गुणन के पूर्ण संयोजक बाड़ें।

देखल जाउ त सइयाँ स्वामी के ही विकसित रूप ह- स्वामी/साईं/सैयां/सइयाँ । एहिजा स्वामी एकायत्त अधिकारी के वाचक बा । आशय ई जे नारी के जे एकमात्र अधिकारी भा मालिक बा ऊ स्वामी ह। पतियो पर्याय आ सर्वाधिक प्रयोग में आवेवाला शब्द बा, बाकिर एकर मुख्य अर्थ आ मुख्य ध्येय पालनकर्ता ह, रक्षक-संरक्षक ह – पाति इति पतिः। पिता जब आपन बेटी के बियाह देलें, त ओकर संरक्षण पतिये पर रहेला। पति के सहधर्मिणी भइला से पत्नी होली। आज के परिवेश में देखल जाउ त हर पति पति ना हो सकेलन; कारण ई बा कि बहुत से औरत आत्मनिर्भर बाड़ी सन। कुछ त मरद तनो से कमजोर आ धनो से गइल बाड़ें; आ उनुकर मेहरारू मरदानन के कान काटत बाड़ी सन। त का ऊ पति कहाए लाएक बाड़ें ? एही तरे भर्ता शब्द बा, जेकर अर्थ भरण-पोषण करेवाला ह आ भार्या जेकर अर्थ ई ह कि जेकर भरण -पोषण कइल जाउ। आजु के संदर्भ में ई दूनो शब्द अपना अर्थ के चिढ़ावत बुझाताड़ें। बाकिर, रूढ़ि होके आपन प्राचीनता के परिचय देत साथे बाड़ें। स्वामी शब्दो सोरह आना सार्थक नइखे; तबहूँ बियाह के बाद तन-मन सौंपाइये नु जाला ! एह से बहुत हद तक ई आजुओ उपयुक्त बा।

सइयाँ मेहरारुन खातिर सब कुछ होलन। तन, मन, धन सब कुछ ऊ उनुका के सौंप देली। उनुका खातिर ऊहे सब कुछ होलें। एही से पुराना जबाना के पति के प्रतिरूप आजुओ पति-परमेश्वर कहालें। एही से सोहागे के ऊ सब कुछ मानेली। सौभाग्य सुंदर भाग्य ह आ ऊ अपना पाणिग्रहण-कर्ता के ही सौभाग्य/सुहाग मानिके सौभाग्यवती/सोहागिन कहाली, काहेंकि स्वामी 'स्व/स्वम् अर्थात् ऐश्वर्य शब्द से निष्पन्न भइल बा– 'स्वमस्यास्तीति' अर्थात् एकरा पास धन बा। हमरा समझ से स्वत्व ही जेकर धन

ह भा धनार्जन ही जेकर कार्य हटे, ऊ स्वामी हवन आ ओह धन के सदुपयोग करेवाली स्वामिनी। संस्कृत में 'स्व' खाली धने के ना, बलुक निजता आ ज्ञाति के भी बोधक ह। पाणिनि के अष्टाध्यायी के सूत्रो से एह बात के पता चलता – 'स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' (1.1.35)। खैर, एहिजा त धने के वाचक बा, एही से एकर व्युत्पत्ति 'स्व+स्वामिन्नैश्वर्ये इति आमिन्' बतावल गइल बा।

स्वामी अनेकार्थी शब्द भी ह। त्रिकाण्ड-शेषकोष के 'सारार्थचंद्रिका' नाम के व्याख्या में कहल गइल बा कि एकर अर्थ भर्ता, प्रिय, कार्तिकेय, अधिपति, ईश्वर, विभु, नृप, कामशास्त्र के प्रणेता वात्स्यायन मुनि, गरुड़ आ परमहंस होला। त्रिकाण्डशेषकार पुरुषोत्तम देव 'स्वामी भर्तरि षण्मुखे'[3.3.272], कुमारस्तु स्वामी द्वादशलोचनः। बालचर्यः सिद्धसेनः कृकवाकुध्वजश्च सः। [1.1.55], विष्णुगुप्तस्तु कौण्डिन्यश्च चाणक्यो द्रोमिणोंऽशुलः। वात्स्यायनो मंदनांगः पक्षिलस्वामिनावपि॥[2.7.22-23] खैर ; एहिजा अनेक अर्थन में से भर्ता ही ग्राह्य बा आ पहिले ऊ भार्या के हर तरह से संरक्षक रहन, आजुओ सामाजिक, धार्मिक आ कानूनी तौर पर जिम्मेदार बाड़न, एह से एह दायित्व के निर्वाह करेवाला त बड़ले नु बाड़न !

अब 'सजना' शब्द के लीहल जाउ। ई शब्द सज्जन से विकसित बा। सज्जनो स्वतंत्र शब्द ना ह। ई सत्+जन के योग से बनल बा। 'सत्' सत्य वाचक बा। ई एक ओर भाववाचक संज्ञा बा,त दोसरा ओर गुणवाचक विशेषणो। ई एक ओर सत् स्वभाववाला परमेश्वर (सत्स्वभावे वेदान्त-सिद्धे परमेश्वरे) भा भूत, वर्तमान, भविष्यत से परे ब्रह्म [कालत्रयाबाध्ये ब्रह्मणि] के बोधक बा त दोसरा ओर वेदविहित मार्ग पर चलेवाला धीर, प्रशस्त, धार्मिक भा मान्य व्यक्ति के।

सज्जन के लक्षण बतावत पद्मपुराण में कहल गइल बा —

निजाचार-ग्राहिणो ये कुर्वंतो वेद-सम्मतम्।
पापाभिलाष-रहिताः सज्जनास्तेप्रकीर्तिताः।

अर्थात् शास्त्र आ कुलाचार के अनुसार जे लोग आचरण करेलन आ पापकर्म से दूर रहेलन, ऊ सज्जन कहालें।

विवाहिता अपना पति में ईहे चाहेली। कवनो मेहरारू ना चाहे जे ओकर मरद दुराचारी आ दुर्व्यवहारी होखे। ऊ त ईहे अपेक्षा करेले जे ओकर सवाङ ओकरा के खूब प्यार देउ। ओकर जोड़ी शिव-पार्वती, लक्ष्मी-नारायण सीता-राम लेखा परस्पर प्रेम आ समर्पण से पूर्ण होखे। ओकर हिस्सा के प्रेम बँटवारा में ना जाउ। ऊ सब दुख बरदास कर सकेले, बाक़िर सवत के ना। ओकर विचार ह जे ओकर

मरद राजा नियन समस्त सुबिधन से पूर्ण भा खूब कमासुत होके ओकरा के रानी आ मलकिनी बनाके राखे। अपना कुल-खानदान के नाँव ऊँच करे, जेसे ओकरो अपना पति पर अभिमान होखे।

अब बलमा भा बलम पर बिचार कइल जाउ। बलमा भा बलम बलवाला के वाचक बा। अबर मरद कवना काम के ? बरियारे मरद घरो लायेक होला आ बाहरो लायेक। वीरता सबके वश में कर लेले। मेहरारुनो के असली सुख बलवाने पति से होला, एही से बलमा-बलमा कहिके अपना सवाङ के गुण गावेली। मरदे के जोरे मेहरारुनो के मान भा इज्जत रहेला ; ना त अबरा के मेहरारू सँउसे गाँव के भउजाइये लागेले।

बल के कई गो भेद बाड़ें ; जइसे -बाहुबल, मनोबल, उपायबल आ बंधुबल। एही तरे, मौल, भृत्य, सुहृद, श्रेणी, द्विषद, आटविक---। एही तरे,

विद्याभिजन-मित्राणि-वृद्धि–सत्त्वधनानि च।
तप: सहाय वीर्याणि दैवं च दशमं बलम् ॥

'योषितां यौवनं बलम्' माने औरतन के युवावस्था ही बल ह ; अइसन नीतिशास्त्र के कथन बा। योषित के तीन भेदन में साध्वी, भोग्या आ कुलटा में से कुलटा त कुलबोरन हई। साध्वी लोक-परलोक के सुधारे खातिर धरम-करम में अधिका लागल रहेली, अइसन प्राचीन मत रहल बा। भोग्या नारी ही भोग-विलास, वस्त्रालंकार आदि पर अधिक ध्यान देली ; बाकिर कुलटा नियन ना होली, जे देखावे खातिर झूठ-मूठ के पति के सेवा आ आवश्यकता पर उनुकर हत्या तक करे में ना चूकेली। वास्तव में, स्त्रियन के अंतर्भेद के बारे में केहू ना जान सकेला– 'स्वात्मा रामा विजनन्ति मनसा तां न पंडिता:' - ई कहल बा।

जे होखे, ई तीन - सइयाँ, सजना आ बलमा एगो हर तरे सक्षम पुरुष में पावल जाये वाला गुण के परिचायक बाड़ें। राजा, रजऊ में स्वामित्व के समस्त वैशिष्ट्य बा आ देखल जाउ त स्वामी/सइयाँ में एह तीनों शब्दन के अंतर्भाव बा। स्वामी ईश्वर आदि के वाचक होके परमेश्वरत्व तक पहुँचावेवाला बा। बाकिर सइयाँ जब दगाबाज बुझाये लागेला त ओहिजा ओकरा में स्वामी के गुण ना, बलुक धृष्ट, शठ भा प्रोषित नायक के गुण होला। प्रत्येक रमणी उत्तम आ अनुकूल नायके के चाहेली। कारण ई जे विधिवत पाणिग्रहण कइलस ऊ एकनिष्ठ आ तन, मन, धन के समर्पक, मानिनी के मान के रक्षक होखी तबे ओकरा आपन दाम्पत्य जीवन के सार्थक सुख बुझाई।

भोजपुरी गजल : जाने आ माने के कुछ बिन्दु

सौरभ पाण्डेय

ग़ज़ल काव्य परम्परा के एगो मजगर विधा हऽ। जहँवा एकर आपन एगो धनी इतिहास बा, उहँवें गर्व करे लाएक एकर वर्तमानो बड़ुए। एह लगले ई बिन्दु जरूर जाने जोग बा, जे भारतीय भूभाग के उत्तर-मध्य क्षेत्र में जनमल दू मुख्य भाषा के सुरुआतिये दौर में अभिव्यक्ति खातिर गजल जइसन विधा के प्रयोग होखे लागल रहे। जवन तब 'हिन्दवी' भाषा कहाय, गजल के काव्यरूप ओही भासा में ओही समय में परसिद्ध होखे लागल रहे। ईहे हिन्दवी भाषा आगा चल के दू भाग में बँटा गइल। एक ओरे रेख्ता के राहे बढ़त ई उर्दू कहाये लागल, आ दोसरा ओरे एकर विकास हिन्दी के रूप में भइल। एही कारन, आगा ई बिधा खलिहा उर्दू भा हिन्दिये में ना, बलुक भारत के दोसरो भाषा आ बोली में निकहे प्रचलित होखे लागल। ई जरूर बा, जे अरूज (गजल के व्याकरण) के अनुसार मान्यता प्राप्त बहर आ पिंगल-शास्त्र के छन्द कूल्हि के वर्णिक-मात्रिक बेवस्था के हिसाब से एक जरिये देखल जाव, त दूनो में रुचगर समानता लउकला के बावजूद एगो लमहर समै से गजल के विधा प कहन आ बिम्ब के लेके उर्दू शब्द आ जीवन-परम्परा के बेहिसाब जोर रहल बा। एकर असली कारन भारतीय भूभाग में गजल के लउकत सीधा आगमन फारसी भासा का ओर से भइल बा। बहर के आ वर्णिक छन्द के कौ गो रूप के बीच लउकत समानता के कारनन के ढेर बिन्दु गजल के भारत अइला के पहिले के प्रभावी बेवहार आ परिस्थिति से उपजल बिन्दु बाड़न सऽ। एहू प कबो गहिर चर्चा भइल बहुत जरूरी बा। बाकिर, एही लगले ई धेयान राखल जरूरी बा, जे एह तरी के कवनो चर्चा के जगहा बनते कतना ना जानल-बिना जानल, मानल-बिना मानल, बूझल-बिना बूझल अवधारणा कूल्हि जबरिये सोझा नाचे लगिहें सऽ। आजु ले ईहे होत आइल बा। कारन, जे अइसन अवधारणा के बिन्दु, कहे के नइखे, जे भासा के लेके

देश में अबले होत आवत राजनीती से उपजल बिन्दु ढेर होलन स। एह आलेख के सीमा में ओइसे एह चर्चा के उठावल जरूरी नइखे।

गजल के विधा जतना सोझ आ असान बुझाले, ओतना होले ना। एह में कवनो शक के गुंजाइश नइखे जे गजल के विधा असल में देखल जाव, त निकहा चुनौती भरल विधा ह। गजलकार बहर के एगो बनल-बनावल साँचा में भावबोध से उपजल बिचारन के असान, मने कि बूझे लाएक भासा में सोझा करेला। जवन ई कहल जाय, जे गजल के सरूप में लउकत भाषागत सहजता गजलकारन के एक सुरिये होत दीर्घकालिक अभ्यास के बेजोड़ प्रतिफल होला त बेजायँ ना होई। अइसन कवनो अभ्यास गजल के संस्कार के गहिर समझ, भाषा प मजगर अधिकार, तर्कसंगत विचार आ संवेदनशील भावबोध के संप्रेषण का साथे-साथ रचनात्मकता में मौलिक गठन के मेल से संभव होला। ई सभ कवनो अभ्यासी गजलकार का सोझा चुनौती अस आवेला। अब एह बतिया के भाषा के विन्यास के सोझा देखीं जा। ई सर्वमान्य तथ्य बड़ुए, जे अभिव्यक्ति कवनो तरीका के होखो, ऊ विधा आ विधान के परम्परा आ नियम के अनुसार भाषायी बेवहार पावेले। एह से ई होइये ना सके जे भावभूमि के हिसाब से भोजपुरी भाषा के अभिव्यक्ति उर्दू भा हिन्दी के वैचारिकता आ भावभूमि के सीधे-सीधे अपना लीही। काहें जे अभिव्यक्ति आ समझ के धरातल प भोजपुरी भाषा के प्रतीक, बिम्ब आ परम्परागत सोच भर में ना, विचार-तत्व तक में निकहा अंतर भइल करेला। अइसन कवनो वैचारिकता समाजिके ले ना, बलुक मानवीय आचरण से सम्बन्धित बेवहारी आचार-बिचार तक में भलहीं इशारा आ संकेत में होखो- एह अंतर के सँकारत लउकेले। एह से एह भाषायी, भावभूमि आ बेवहार में के एह अंतर के एकबेरिये नकार दीहल कवनो भाषा के हिसाब से उचित ना होई। एह से भोजपुरी गजल के माध्यम से भोजपुरी भाषा के बुनावट, भोजपुरिया आचरण आ भोजपुरी माटी के गंध के तासीर बुझाये के चाहीं।

गजल के भाषा में व्याकरण के संरचना के बहुत महत्व बा। उर्दू के बड़-बड़ गजलकारन के ई बिसेसता ह, जे उनकर गजल के सब्दे भर ले ना, बलुक ओकर भसो के बुनावट व्याकरण आ तर्क के संतुष्ट करत लउकेले। बाकिर एह तथ्य का ओर भोजपुरी के गजलकार ओतना जागरुक ना लउकसु। साँच बात त ई बा जे गजल के भाषा आ ओकर बनावट आ बुनावट ना त बनावटी होखे के चाहीं, आ ना बोलचाल के भाषा से

फरका होखे के चाहीं। ढेर साहित्यिक बनावे के फेरा में गजल अगर बोझिल भ गइल त ईहो गजल के मेयार के छोट करत मानल जाला।

ई बात सभ भाषा के सभ बड़ गजलकार एक सुर से सँकारेले, जे जब कवनो शेर के शब्द अपना मूल अर्थ से आगा के अर्थ का ओर इशारा करे लागे, ओह शब्दन से बनल वाक्य से चमत्कारी भाव-बिम्ब लउके लागे, त ओजुगे से ओह शेर में शेरियत के शुरुआत भइल मानल जाला। एह मुद्दा प असगर वजाहत साहब, जे उर्दू भाषा के बहुत बड़ शाइर हवन, के कहला प धेयान दिहल जरूरी बा, ’शेर जब भासा के सीमा तूर देला, तबहीं शेर हो जाला..’ एकर मतलब ईहे भइल जे जब शेर में प्रयोग कइल गइल शब्द के अर्थ अपना सीमा से बहिरी के कुछ बतावे आ देखावे लागे त बिसेस फ़ॉर्मेट में सजल ऊ ‘दु-पदी’ शेर हो जाला। माने, बहर में फिट हर ‘दू पंक्ति’ से शेर ना बन जाला ! एह से, ई कहल कवनो गलत ना होई, जे गजल के विधा जतना सहज आ असान बुझाले, ओतना होले ना। गजल के लेके कहल गइल ई बिन्दु खलसा उर्दू भा हिन्दी भाषा खातिर ना, बलुक हर भाषा में होत गजल खातिर सही बा। दरअसल, गजल के बिधान के ईहे असली बिन्दु हऽ। एह से गजल चाहे कवनो भाषा में काहें ना होखो, शेरियत आ गजलियत के लेके कहल गइल ई बात हर गजलकार के माने आ अपनावे के चाहीं। एह आलोक में भोजपुरी में गजल के सरूप आ इस्थिती देखल-जानल जाव त बहुत टटकार के अनुभव ना होला। कारन जाने के पहिले भोजपुरी भाषा के गजल के आजु के सरूप आ बेवहार के बूझे में प्रभावी बिन्दुअन प एक हाली नजर फेर लियाव त नीमन होई।

'सँझवत' एगो अव्यावसायिक लघु पत्रिका हटे। पत्रिका महसूस करतिया कि एकरा निरंतर आ समय से छपत रहला खातिर राउर आर्थिक सहयोग बहुत जरूरी बा।

आग्रह बा कि वार्षिक सदस्य बनिके आ बनाके सँझवत के हाथ तनिका मजबूत कइल जाव।

पत्रिका परिवार चाहता कि एहके प्यार से देखे-पढ़ेवाला ढेर हाथन तक एकर पहुँच होखो।

वार्षिक शुल्क : □ 240/-
Paytm number - 9113236529

संपादक, ‘सँझवत’

पत्रिका : एक नजर में

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/ मासिक पत्रिका/ अक्तूबर-दिसंबर, 2017/दाम 25रुपया
संपादक- प्रो. ब्रजकिशोर
संपर्क : 204, ब्लॉक-ए, साकेत प्लाजा, जमाल रोड, पटना-1.

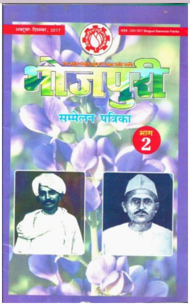

परास /भोजपुरी के त्रैमासिक पत्रिका / जुलाई-सितंबर, 2018 / दाम-15रुपया
संपादक- डॉ. आसिफ रोहतासवी
संपर्क : तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी , द्वारा- भावना मेडिकल हॉल, न्यू मार्केट, तेनुघाट-1, जि.- बोकारो-829123 (झारखंड)।

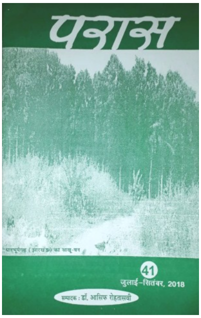

गदहपूरना / भोजपुरी के चौमासिक पत्रिका / सितंबर, 2014-अप्रैल, 2015
दाम 20 रुपया/ संपादक- डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'/

संपर्क : अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, स्टेट बैंक(मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर-802101(बिहार)

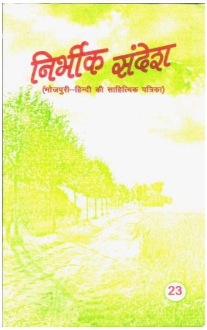

निर्भीक संदेश/ भोजपुरी-हिंदी के साहित्यिक पत्रिका/ मई, 2018/ डॉ. अजय कुमार ओझा / कीमत- 20 रुपया/ संपर्क : ओझा प्रकाशन, होल्डिंग नं.102, जोन नं.11, भोजपुरी पथ, बिरसानगर, जमशेदपुर-831019 (झारखंड) ईमेल- nirbhik_sandesh@gmail.com

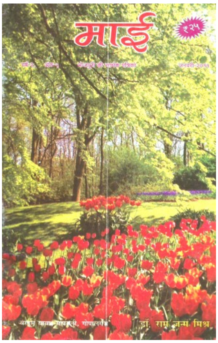

माई / त्रैमासिक पत्रिका / भोजपुरी के साहित्यिक पत्रिका।/ जनवरी 2011 / एकांकी विशेषांक / दाम-25 रुपया
अतिथि संपादक- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह / संपादक- डॉ. रामजन्म मिश्र संपर्क : प्रगति भवन, चैती दुर्गा स्थान, साहिबगंज-816109(झारखंड)।

किताबि : एक नजर में

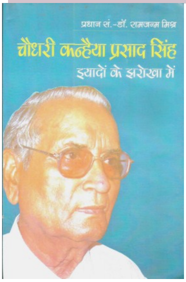

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में-
संपादक- डॉ. रामजन्म मिश्र
पन्ना-184,
कीमत- 400 रुपया
प्रकाशक- समीक्षा प्रकाशन, जे.के. मार्केट, छोटी कल्याणी, मुजफ्फरपुर(बिहार)-842001

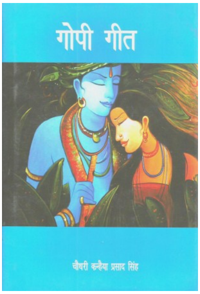

गोपी गीत- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह "आरोही"
पन्ना-128,
कीमत- 151रुपया
प्रकाशक- कन्हैया प्रसाद सिंह "आरोही" स्मृति संस्थान, बजाज शो रूम की गली, पकड़ी, आरा `(बिहार)।

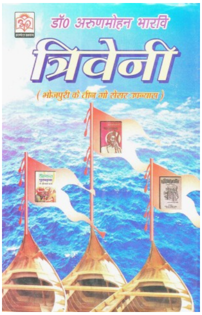

त्रिवेनी- डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'
पन्ना-232,
कीमत- 300रुपया
प्रकाशक- अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, स्टेट बैंक(मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर-802101(बिहार)

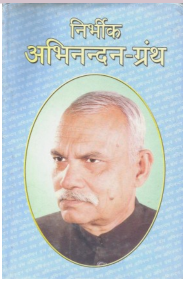

निर्भीक अभिनंदन ग्रंथ
संपादक : अजय कुमार ओझा/पन्ना-396, कीमत - 351 रुपया/प्रकाशक- जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् , होल्डिंग नं.102, जोन नं.11, भोजपुरी पथ, बिरसानगर, जमशेदपुर-831004 (झारखंड)

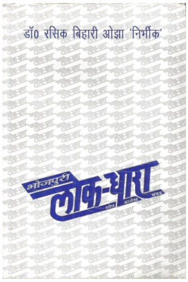

भोजपुरी लोक-धारा
डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'/पन्ना-108,
कीमत- 100 रुपया,
संस्करण-2006
प्रकाशक- जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् ,होल्डिंग नं.102, जोन नं.11, भोजपुरी पथ, बिरसानगर, जमशेदपुर-831004 (झारखंड)

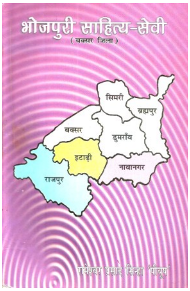

भोजपुरी साहित्य सेवी- रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष'/ बक्सर जिला के साहित्यकारन के परिचय। पन्ना-64, कीमत- 70रुपया/ प्रकाशक- पुष्कर प्रकाशन, सिविल लाइंस, बक्सर- 802101

किताबि : एक नजर में

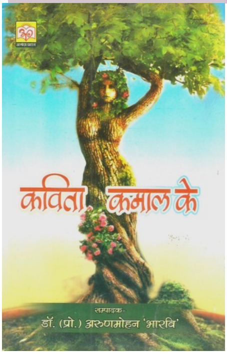

कविता कमाल के एगो साझा कविता-संकलन हटे, जेकर संपादक हईं डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'। 2017 में प्रकाशित एह किताबि के प्रकाशन अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, स्टेट बैंक(मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर- 802101(बिहार) से भइल बा। 144 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा-200रुपया। एकरा में कुल 26 गो कवि शामिल बाड़न।

कहानी कमाल के एगो साझा कहानी-संकलन हटे, जेकर संपादक हईं डॉ. अरुणमोहन'भारवि'। 2018 में प्रकाशित एह किताबि के प्रकाशन अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, स्टेट बैंक (मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर- 802101(बिहार) से भइल बा। 184 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा-300 रुपया। एकरा में कुल 28 गो कथाकार शामिल बाड़न।

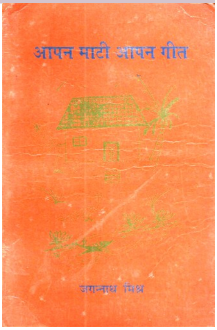

आपन माटी आपन गीत जगन्नाथ मिश्र के गीतन के संग्रह हटे। एकर प्रकाशन विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बिहार (पटना) से भइल बा। अक्टूबर, 2012 में प्रकाशित 94 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा 200 रुपया।

कवना बने रहलू भोजपुरी संस्कार गीतन के संकलन ह। एकर संपादक हईं जगन्नाथ मिश्र। 2017 में प्रकाशित 210 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा 501 रुपया।

पुरवइया के लहरा लोकगीतन के संकलन ह। एकर संपादक हईं जगन्नाथ मिश्र। एह दूनो किताबिन के प्रकाशन ओहिजे से भइल बा। 2018 में प्रकाशित एह किताबि के कीमत बा 151 रुपया।

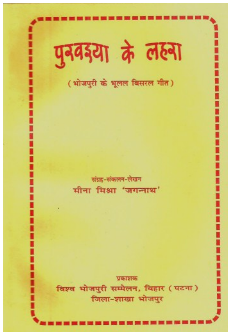

किताबि : एक नजर में

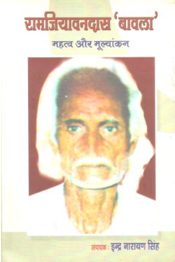

रामजियावनदास 'बावला' बावला जी पर भिन्न-भिन्न लेखकन द्वारा लिखल कई गो निबंधन के संकलन हटे, जेकर संपादक इंद्र नारायण सिंह बाड़ें आ एकर प्रकाशन वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी, तेनुघाट-1 (झारखंड) से भइल बा।

किसिम किसिम के फूल- श्रीभगवान पांडेय 'निरास' का गीतन के संग्रह हटे। एकर प्रकाशन 2018 में नवजागरण प्रकाशन, ए-3, विकास कुंज एक्स., विकास नगर, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 से भइल बा।

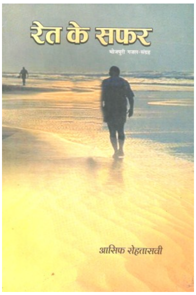

रेत के सफर आसिफ रोहतासवी के एगो गजल संग्रह हटे, जवना के प्रकाशन सन् 2010 में वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी, तेनुघाट -1(झारखंड) से भइल बा। एकर कीमत 125 रुपिया बाटे। आसिफ रोहतासवी भोजपुरी गजल का क्षेत्र में एगो स्थापित नाम बा. एह किताबि के एगो शेर- जीव छछनल बा, छटपटाइल बा/अइसहीं का गजल कहाइल बा!

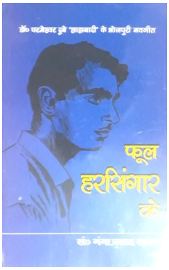

फूल हरसिगार के डॉ. परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' के 47 गो नवगीतन के संग्रह बाटे जेकर संपादन गंगा प्रसाद 'अरुण' जी कइले बानी। 106 पन्ना के ई किताबि प्रकाशित भइल बिया लकीर प्रकाशन, 21-बी, रोड-1, जोन-4, बिरसानगर, जमशेदपुर-831019 से आ एकर मूल्य बा- 200 रुपया। एह संग्रह में डॉ. परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' का नवगीतन पर लिखल कई गो लेखन के लेखो के शामिल कइल गइल बा।

भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह द्वारा तइयार कइल भोजपुरी के एगो अइसन संदर्भ ग्रंथ हटे, जवन साहित्य के सउँसे प्रकाशन के सोगहग दस्तावेज बाटे। 144 पन्ना का एह किताबि के प्रकाशन 2015 में अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, स्टेट बैंक(मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर- 802101(बिहार) से भइल बा एकर कीमत 300 रुपया बाटे। एह किताबि के संपादन कइले बानी डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'।

हिंदी किताबि : एक नजर में

तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की पुस्तक के लेखक हईं अजीत दुबे आउर एकरा के प्रकाशित कइले बा इंडिका इंफोमीडिया, जनकपुरी,नई दिल्ली-110058। 2016 में प्रकाशित एकरा संस्करण के कीमत बा 300 रुपया। ई किताबि भोजपुरी भाषा के संविधान का अष्टम सूची में शामिल करावे के अभियान का विशेष संदर्भ में लिखल गइल बिया। लेखक अपना एह अभियान में पूरा प्रमाण का सङे लउकता।

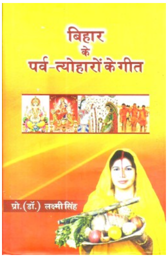

बिहार के पर्व-त्योहारों के गीत के लेखिका बानी डॉ. लक्ष्मी सिंह। 384 पन्ना के एह किताबि के प्रकाशन भइल बा वातायन मीडिया एंड पब्लिकेशन प्रा. लि. फ्रेजर रोड, पटना-800001 से आ एकर कीमत बा 750 रुपया। एकरा में अइसना लोकगीतन के संग्रह कइल गइल बा, जवन बिहार का घर-घर में पर्व-त्योहार पर गावल जाले सन।

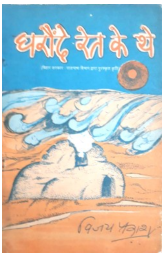

घरौंदे रेत के थे विजय प्रकाश का 51 गो हिंदी गीतन के संग्रह हटे जेकर प्रकाशन 1998 में रोहतास जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन, सहसराम से भइल बा। 64 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा 60 रुपया।

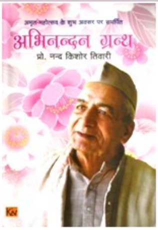

डॉ. नंदकिशोर तिवारी अभिनंदन ग्रंथ डॉ. नंदकिशोर तिवारी के अभिनंदन ग्रंथ हटे, जवना में उनका व्यक्तित्व आ कर्तृत्व पर अनेक विद्वान आ आत्मीय लोगन के लेख आ संस्मरण का सा साथे शुभकामना पत्र बाड़े सन।

संभवामि युगे-युगे केशव मोहन पांडेय के एगो आलेख-संग्रह हटे। एह किताबि के प्रकाशन 2017 में नवजागरण प्रकाशन, ए-3, विकास कुंज एक्स., विकास नगर, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 से भइल बा। 124 पन्ना के एह किताबि के दाम बा 250 रुपया। एह पुस्तक में अलग-अलग विषय पर लेखक के निबंध सहज शैली में समय के रेखांकित करत लउकतारे सन।

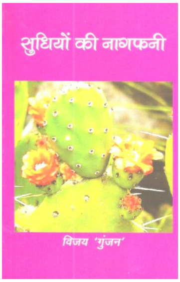

सुधियों की नागफनी गीतकार विजय गुंजन का 65 गो हिंदी नवगीतन के संग्रह हटे। 2019 में प्रकाशित 84 पन्ना का एह किताबि के कीमत बा 125 रुपया आ अनुसंधान प्रकाशन, साहिबाबाद, गाजियाबाद -201005 से एकर प्रकाशन भइल बा।

समीक्षा

पांडेय कपिल से रू-ब-रू करावत अनमोल विशेषांक

समीक्षक : सीमा मिश्र

समीक्ष्य कृति

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के 'पांडेय कपिल स्मृति अंक'

जुलाई-दिसंबर, 2018 (संयुक्तांक)

अतिथि संपादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रकाशक : अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, बी-12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, बेली रोड, जगदेव पथ, पटना-800014

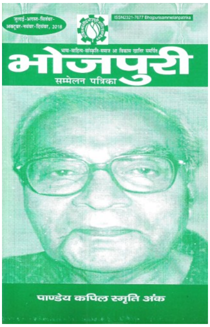

सिलसिला

- संपादकीय–1 —भगवती प्रसाद द्विवेदी 2
- संपादकीय–2 —डॉ. महामाया प्रसाद विनोद 5

1. पाण्डेय कपिल —डॉ. शंभुशरण सिन्हा 7
2. पाण्डेय कपिल के प्रति —डॉ. शंभुशरण सिन्हा 13
3. भोजपुरी के समर्पित साधक.......... —सूर्यदेव पाठक 'पराग' 14
4. एगो अभूतपूर्व व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल जी —गंगा प्र0 अरुण 23
5. जिनिगी के जीयल हऽ बड़की लड़ाई —भगवती प्र0 द्विवेदी 29
6. भोजपुरी साहित्य में पाण्डेय कपिल के योगदान —डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' 34
7. बेवहार–कुशल पांडेय कपिल जी से हमार लगाव —डॉ. ब्रजभूषण मिश्र 39
8. पांडेय कपिल : एगो संस्मरण —रामनिहाल गुंजन 47
9. भोजपुरी साहित्य के मील के पत्थर : पांडेय कपिल —डॉ. महामाया प्रसाद विनोद 54
10. भोजपुरी के मलहोरी —रामनारायण उपाध्याय 59
11. पाण्डेय कपिल : एगो स्फटकीय व्यक्तित्व —डॉ. शारदा पाण्डेय 63
12. भोजपुरी के शिखर व्यक्तित्व : पाण्डेय कपिल —प्रो. (डॉ.) नीरज सिंह 67
13. 'हम त राही हईं, रुकीं कबले : पाण्डेय कपिल —डॉ. सुनील कुमार पाठक 75
14. भोजपुरी के शिखर पुरुष आचार्य पाण्डेय कपिल —व्यास मिश्र 80
15. भोजपुरी के अमर साधक : पाण्डेय कपिल —डॉ. बलराम दूबे 88
16. दीया बुताइल इँजोर दे गइल —ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी 95
17. सरलता,, सहजता के जीवन्त मूर्ति : कपिल जी —मार्कण्डेय शारदेय 101
18. संत सुभाव के साहित्यकार : पांडेय कपिल —दिलीप कुमार 103
19. भोजपुरी के मजबूत स्तम्भ : पाण्डेय कपिल —प्रो. अरविन्द कुमार वर्मा 'अरविन्द' 107
20. इयाद के ऐनक में पाण्डेय कपिल —श्रीमती सुशीला पाण्डेय 110
21. बानगी : आचार्य पाण्डेय कपिल के चुनिन्दा गजल 116

❖❖❖

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के **पांडेय कपिल स्मृति अंक** भगवती प्रसाद द्विवेदी का संपादन में निस्संदेह एगो सँजो के राखेवाला धरोहर जइसन हो गइल बा। एह अंक में पांडेय कपिल जी का कर्तृत्व आ व्यक्तित्व- दूनों पर काम भर सामग्री मिल जाता। द्विवेदी जी अपना संपादकीय में लिखतानी कि "ओइसे त पुन्नश्लोक पांडेय कपिल के व्यक्तित्व-कृतित्व
के अतना आयाम आ अवदान बा कि ओह सबके एगो छोट काया में समेटि पावल संभवे नइखे, तबो उहाँके स्मृति में सरधा के अँजुरी से पत्रिका के फूल समर्पित कइल जा रहल बा।" अतना सामग्री पांडेय कपिल जी पर कई कोणन से शोध करे के रास्ता खोलि देबे खातिर काफी बा।

महामाया प्रसाद विनोद जी अपना संपादकीय में पांडेय कपिल जी के भोजपुरी खातिर एगो समर्पित व्यक्तित्व मानतानी। डॉ. शंभुशरण सिन्हा उहाँका व्यक्तित्व के समझे खातिर एगो तालिका बनवले बानी आ कपिल जी का कवि रूप, उपन्यासकार रूप, संपादक रूप, अनुवादक रूप आ संगठनकर्ता रूप के बढ़िया विवेचन प्रस्तुत कइले बानी।

सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी अपना लेख में पांडेय कपिल जी के भोजपुरी के समर्पित साधक बतवले बानी। एह विवेचनात्मक लेख में उहाँके लेखनी संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करत कपिल जी के लेखन के केंद्र में राखिके मूल्यांकन कइले बिया।

भगवती प्रसाद द्विवेदी जी अपना लेख 'जिनिगी के जीयल ह बड़की लड़ाई' में एह बात पर विशेष बल देले बानी कि कपिल जी साहित्य रचते भर ना रहलीं, बलुक सतासी बरिस के आखिरी साँस ले साहित्य के भरपूर जियबो कइलीं। द्विवेदी जी उहाँके बहुत करीब रहल बानी, एहसे एह लेख में अइसन लागता जइसे उहाँका कपिल जी के साँस -साँस से परिचित रहीं। उहाँका मानतानी कि अनुभव-अनुभूति के आँच में पगल पांडेय कपिल जी के कालजयी कृति समकालीन युगधर्म के ऐनक बाड़ी स।

'भोजपुरी साहित्य में पांडेय कपिल के योगदान' में डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' जी मानतानी कि भोजपुरी के साहित्यिक आंदोलन आ संगठन लेके पांडेय कपिल जी एह विकास सड़क के आखिरी आ महत्वपूर्ण खंभा रहीं, जेके 'माइल स्टोन' कहल जाला।

निस्संदेह कहल जा सकता कि एह अंक के अनमोल बनावे में डॉ. ब्रजभूषण मिश्र आ डॉ. नीरज सिंह के संस्मरणात्मक निबंधन का सङहीं अंक के शेष लेखकन के भी बड़हन भूमिका बा।

प्रवेशांक

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

प्रिय भाई विमल जी,

'सँझवत' के समहुतांक पाके दिली खुशी भइल। पत्रिका के मार्फत रउआँ भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ कला के जियतार बानगी पेश कइले बानीं। 'स्वस्थ आलोचना के राहि विकसित' करेके राउर संपादकीय उतजोग स्वागत-जोग बा। डॉ. नंदकिशोर जी तिवारी के साक्षात्कार एह अंक के खास उपलब्धि बा। उहाँके खुलिके आ कतहीं-कतहीं सम्हरिके माकूल जवाब देलें बानीं। हालाँकि किछु बिन्दुअन पर, उहाँ से सहमत भइल सम्भव नइखे, बाकिर तबहूँ तकरीबन तमाम जरूरी मुद्दन पर उहाँके बेबाक ढंग से एगो भाषा विज्ञानी के रूप में सकारात्मक आ रचनात्मक पक्ष के उजागर कइले बानीं। इहे सकारात्मकता सौरभ पाण्डेय के आलेखो में झलकत बा। 'किताबि : एक नजर में' अच्छा प्रयोग बा। गीत,ग़ज़ल भा कविता अगर एक साथे दीं, त बेहतर होई। उमेद बा, मौजूदा अपसांस्कृतिक माहौल में भोजपुरिया समाज के जगावे आ भाषा-साहित्य-संस्कृति के जोगावे में 'सँझवत' रचनात्मक भूमिका निबाहत रही। हमार हार्दिक बधाई !

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना।

सँझवत याकि संझाबाती भोजपुरी के सांस्कृतिक बिरासत ह। ई मानुस के भीतर के चिर कामना, प्रतीच्छा, ज्ञान, सत्य, अन्हरिया प बिजय के परतीक ह। सँझवत वैदिक बिनय 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के बेवहारिक फैलाव ह जवन परंपरा का सरूप में एह संस्कृति में अभिओ ले मौजूद बा। प्रवेशांक का रूप में आइल भोजपुरी पत्रिका 'सँझवत' आपन नाँव आ सरूप में एही बिरासत के सँजोवे के एगो जतन के रूप में लखाता। भोजपुरी के भाषायी आ सांस्कृतिक संवेदना के लक्ष्य के लेके समहुत अंक के रूप में प्रकाशित ई पत्रिका भीड़ में एकदमे अलगा नजर आवतिया, आपन गरिमामयी आभा बिखेरत। **दिनेश पाण्डेय,पटना।**

रूपगुणसंपन्न 'सँझवत' के संपादन-प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। संपादन-कौशल सराहे जोग बा। अइसे त, मोटा-मोटी तौर पर अंक के मये सामग्री स्तरीय आ पठनीय बा, बाकिर आदरणीय डॉक्टर नंदकिशोर तिवारी जी से राउर बतकही “कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे के चाहीं” हमरा ढेर नीक लागल ह। 'सँझवत' अपना संकल्प-साधना में सफल होखे, एही शुभकामना के साथ,

जगन्नाथ, पटना।

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

राउर लिखल, सहेजल, बहुत नीमन त्रैमासिक पत्रिका काल्हुए मिलल बाकिर अबहीं एगो सँघतिया के घरे वियाह बा एह से एगो-दुगो पाना उलटले बानी आतना नीमन लागल बा कि अब का कहीं। पूरा पढ़ला प त मन गदगद हो जाई। दु-चार दिन के बाद हम रउरा पत्रिका के दाम रउरा पता पर डाँक से भेजि देबि।

संतोष कुमार पांडेय, बोकारो (झारखंड)

कवनो पत्रिका पहिला बेरि निकाले खातिर,पहिले त हिम्मति, फेर साधन, तब श्रम के जरूरत पड़ेला,बाकी एकर निरंतरता बनवले राखे खातिर तपस्या के जरूरत पड़ेला। विश्वास बा,जब रउआँ शुरू कइले बानी त एह तपस्यो में कामयाब होखबि। बधाई। **अनिल ओझा 'नीरद', संपादक, भोजपुरी माटी, कोलकाता।**

आजकाल दौरा प बानीं। काल्हुए बलिया से लवटनीं आ काल्हुए राउर पत्रिका डाकिया हाथे दिहलस। कलेवर देखि के मन नस्टेल्जिक भ गइल। मुखपृष्ठ प बड़ नीमन चित्र बा। बधाई। **सौरभ पांडेय, नैनी, प्रयागराज।**

सँझवत मिलल। आवरण पृष्ठ पर तुलसी चउरा पर संझवत देखावत अच्छा लागत बा। दमदार प्रवेशांक का संगे भोजपुरी पत्रिका देख के आशा बनत बा कि लमहर डेग राउर बढ़ल बा। परामर्श मंडल में विद्वान लोग के जोड़ले बानी वोह सबके अच्छा सहयोग मिली। आशीर्वाद आउर शुभकामना स्वीकार करीं।

डॉ. रामजन्म मिश्र, संपादक, माई, साहेबगंज, झारखंड।

बिजुलिया टिहुकल रहे। तलेक भक से अँजोर हो गइल। देखनी कि सामने डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल खड़ा बाड़े। अपना संस्कार का मोताबिक प्रणाम-पाती कइले आ एगो कुर्सी खींच के सामने बइठि गइले। अपना बेग में से एगो किताबि निकालि के दिहले। उलटि-पलटि के देखनी त ऊ किताबिना एगो भोजपुरी पत्रिका निकललि। नाम पढ़नी त मन जुड़ा गइल। नाम बड़के माने समेटले चार अक्षर के एगो छोट कविता बुझाइल- 'सँझवत'। उछाह का मारे हाथ पाकिट का तरफ चल दिहलस। बाकिर मन के कंजुसवा डँटलसि। पइसा देबहीं के बा त एतना हबहबी का बा ? हाथ पाकिटे का लगे आपन देंहि हगुआवे लागल जइसे ऊड़िस चाहे चिल्लर कटले होखे।

हम अपना नाम का आगे आदरणीय पढ़नी त फूलिके कुप्पा हो गइनी। हम कुप्पा के कबो देखले नइखीं। बाकिर काहें दूना जे फूलेला ऊ कुप्पे

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

होला। कुप्पा कहलसि- खबरदार। अब पइसा देब त हम पचकि जाइबि। हमार का ईजति त तहार खराब होई। सोचनी कि ठीके कहता। एतना बड़ विद्वान कवि आ लेखक विमल जी हमरा के एतना आदर देले बाड़े त 'सँझवत के दाम देके हम एगो माहमूली गोंहकी के दरजा काहें लीं ? विमल जी हमरा के आपने आदमी नू समझि के आदर देले बाड़े ? ना त ए छूँछा के के पूछा ? ना ना अपना आदमी के दाम नाहिंए दीहल ईमानदारी ह। कहल बा जे सात-पाँच के लकड़ी एक आदमी के बोझा। लेहाजे केहू ना बोले, एकर मतलब ई ना ह कि ओकरा पर एतना ना बोझा लाद देबे के चाहीं जे घेंट लागि जाव।

टिकवले रहनी कि ठकुरसोहाती का जरिये विमल जी के खूब उत्साह बढ़ाइबि बाकिर लव ना लगल। काहेंजे पढ़नी त समझ में आइल कि 'सँझवत' में छपल सब कुछ सँचहू बड़ाई लाएक बा। ठकुरसोहाती खातिर त साँच ले बेसी झूठ के मिलावट होखे के चाहीं नू ? एकरा अलावे जनमतुआ का बारे में अभी का कहाव ? अभी त सोहरे गावल ठीक कहाई। **नारायण दुबे, कोलकाता।**

भाई कृष्ण कुमार जी के सौजन्य से सँझवत के प्रवेशांक मिलल। रउआँ हमरा के पत्रिका के परामर्श मंडल में रखले बानी, एकरा खातिर आभार व्यक्त करतानी। आगे हरसंभव सहयोग देबे के प्रयास रही। पत्रिका रउआ अस दृष्टिसम्पन्न, समर्पित रचनाकार व्यक्तित्व के कुशल सम्पादन में निरंतर आगे बढ़े आ उपलब्धियन के नया नया मुकाम हासिल करे, एकरा खातिर अशेष शुभकामना।

पत्रिका के कुल्ह सामग्री पठनीय बा। ई रउआ नीमन काम कइनी हँ कि बिना पूर्णता के परवाह कइले, एकरा के समय से प्रकाशित कर देनी हँ। एकरा से सम्पादकीय दृष्टि आ पत्रिका के दिशा के भरपूर परिचय मिल जाता। पत्रिका के अन्यतम उपलब्धि बा आदरणीय डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के साक्षात्कार। उहाँ के अपना तरह के आज अकेला अइसन व्यक्तित्व बानी जेकर हिंदी आ भोजपुरी साहित्य पर समान रूप से मजबूत पकड़ बा। बाकिर डेरात डेरात एगो बात कहल चाहतानी कि जतना तैयारी से रउआँ सवाल कइले बानी, ओतना तैयारी से उहाँ के जबाब नइखीं देले। उहाँ के रउआँ अउर समय देबे के चाहत रहे। ई बात हम एह से कहतानी कि आज भोजपुरी में बढियाँ आ स्तरीय कविता आ कहानी लेखन के अकाल नइखे। आज भोजपुरी

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

कहानी काश्यप जी के बादो काफी आगे बढ़ गइल बिया आ लगभग दर्जन भर कहानीकार एकरा के समृद्ध करे में लागल बाड़न। ईहे हाल भोजपुरी कवितो के बा। मुक्त छंद, गीत , ग़ज़ल, प्रबंध काव्य- हर क्षेत्र में नया-पुरान रचनाकार एकरा के समृद्ध करे में लागल बाड़न। एकरा के सकारात्मक दृष्टि से देखे के जरूरत बा ।

भाई कृष्ण कुमार जी के कहानी 'सेरोगेट मॉम' आज के एगो चर्चित प्रसंग के अपना ढंग से सफलतापूर्वक उठवले बिया। शोध आलेख भी बढियाँ बाड़न स। भाई मार्कण्डेय शारदेय, सौरभ पांडेय, केशव मोहन पांडेय आ दिनेश पांडेय जी के छोट कलेवर में आपन बात सफलतापूर्वक कह लेबे खातिर बधाई । सीमा मिश्र जी के लघुकथा 'बहस' विचारोत्तेजक बिया आ आज के एगो महत्वपूर्ण विषय पर ठहर के विचार करे खातिर प्रेरित करत बिया। संगीत सुभाष जी के दूनो गीत अच्छा लगलन सन। आसिफ जी आ रउरा रचनन के बारे में अलग से का कहे के बा ! रउआँ दूनो आदमी अपना-अपना विधा के अत्यंत समर्थ आ हमार प्रिय रचनाकार हईं। बधाई। सम्पादकीय आ अरुण राय जी के परिचय रउआँ लिखले बानी। दूनो आधनिक भोजपुरी गद्य के स्वरूप आ शक्ति के परिचायक बा। महेंद्र मिश्र जी के भक्ति गीत त सचहूँ बेजोड़ बा। सँझवत के प्रवेशांक खातिर फेर एक बेर बधाई। **डॉ. नीरज सिंह,**

पूर्व अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग,

वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना आउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक 'सँझवत'। पत्रिका 64 पेज के पुस्तकाकार बा। पत्रिका के प्रवेशांक में मसाला से ढेर माल पर जोर दिआइल बा। एसे मन में एगो आस जागत बा कि आवे वाला अंकन में बहुत कुछ बढ़िया पढ़े के मिली। पत्रिका में सब कुछ बा। लेख, कहानी, साक्षात्कार, गीत-ग़ज़ल, समीक्षा आदि के सथवे एगो समृद्ध कड़ी 'किताबि : एक नजर में' जानकारी देबे वाला किताबन पर छोट-छोट टिप्पणी के सथवे परोसल बा। मजगर बा। धरोहर, व्यक्तित्व के सथवे सारगर्भित संपादकीय से सजल पत्रिका के उपस्थिति के स्वागत बा। **केशव मोहन पांडेय,**

संपादक, सर्व भाषा पत्रिका, दिल्ली।

'सँझवत' पत्रिका का हाथ में अइला से मन बड़ खुश भइल, भोजपुरी पत्रिका खातिर मन बहुत ललचत रहुए। एह तरह के पत्रिका त एह अंचल में लउकबे ना

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

करे। 'सँझवत' त्रैमासिक पत्रिका जो हमनी साधारन पाठक के मिलल करी, त ई बात खूबे आनंद के बा। भोजपुरी साहित्यकारन के तरह-तरह के लेख अउर विचार पढ़े के मिली त एहसे खुशी अउर आनंद के दूसर अउर कवन बात हो सकेला ? 'सँझवत' के त अभी जनम भइल ह। ई पत्रिका बड़ होखो- दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करो- ईहे शुभकामना ह। **यदु नंदन प्रसाद 'अशांत', आतपुर, कोलकाता।**

प्रिय विमल जी,

भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति के सेवा का मकसद से सँझवत के प्रकाशन के स्वागत बा। रउआँ के आ पत्रिका परिवार के बहुते बधाई। आज जबकि पारापारी भोजपुरी के पत्रिका बंद हो जा रहल बाड़ी स, भोजपुरी पत्रकारिता संकट में बा, अइसना में सँझवत के शुरुआत उमेद जगा रहल बा। एह प्रवेशांक में राउर संपादकीय चिंता वाजिब बा। बाकिर, विषय पर कुछ आउर गंभीर आ विस्तार में कहल चाहत रहे। काश लोग स्वस्थ आलोचना करित, गुटबाजी में लीन भोजपुरी लेखकन आ समालोचकन से ई उमेद राखल अपना के भरम में डाले के सिवाय फिलहाल आउर कुछ नइखे।

खैर, अंक में सौरभ पांडेय जी के आलेख भाषा आ विषय-वस्तु- दूनों के लिहाज से बहुते महत्व के बा। प्रो. नंदकिशोर तिवारी जी के साक्षात्कार में भोजपुरी भाषा के मानकीकरण आ साहित्य पर खाराखरी विचार आइल बा। बाकिर, मार्कंडेय शारदेय के आलेख में भोजपुरी के कतहूँ दर्शन नइखे होत। एहमें सरणि, प्रकृतिमय, परिपूर्ण, कमनीयता, प्रवीण, अत्यधिक, आराध्या, अनुरूप, गणना, लक्षितन, उत्तरवर्ती, चरणनूपुरन, प्रतिध्वनित, आत्मसात, निनादित, प्रणय निवेदन सन्निवेशद्दष्टिगोचर, संवलित जइसन शब्दन आ पदन के देख के अचरज निराशा आ खीझ पैदा हो रहल बा। सिरिफ भोजपुरी का क्रियापदन से भोजपुरी ना बनेला।

पत्रिका के आकार आ मुखपन्ना के गेटअप आ रंग के चुनाव कुछ जँचत नइखे हमरा। बुझाता कि मनोहर पोथी भा कवनो प्राथमिक कक्षा के टेक्स्ट बुक ह। पत्रिका के पत्रिका अस लउकहूँ के चाहीं। विषय आ रचनन के चुनाव में वर्तमान के टटका संदर्भन के प्रस्तुति पर खास धेयान राखल उचित होई। जरूरत से जादा परंपरावादी आ संस्कृति, संस्कार के रछेया के नाँव पर अनावश्यक परंपराप्रियता ठीक ना होई। कवनो संपादक अपना सोच से

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

सभका के खुश आ संतुष्ट ना करि सके। एहसे कुछ लोग आ गुट के खुशी-नाराजगी भा संतोष-असंतोष से बेपरवाह होके संपादकीय धरम के निबाहेब- ईहे उमेद आ कामना बा। राउर संपादन क्षमता आ संपादन कला के हम विद्यार्थिए जीवन से देख रहल बानी।

आसिफ रोहतासवी, संपादक, परास, पटना।

रामरक्षा मिश्र विमल जी भोजपुरी के एगो नया पत्रिका शुरू कइले बानी। पत्रिका के नाँव बा 'सँझवत'। सँझवत के मतलब हमनी सब जानत बानी जा। हो सकेला एकदम नयकी पीढ़ी के लोग ना जानत होखे। एही शीर्षक से शारदा पांडेय के एगो ललित निबंधो बा। ई पत्रिका भोजपुरी के शोध पत्रिका के संकल्प के साथे छपल बिया। एह पहिलका अंक में भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति के गम्भीर अध्येता प्रो नंदकिशोर तिवारी के इंटरव्यू बा। इंटरव्यू खुदे रामरक्षा जी प्रस्तुत कइले बानी। पूरा इंटरव्यू बहुते महत्व के बा। तिवारी जी भोजपुरी आलोचना के वर्तमान के लेके चिंतित बानी। ई वाजिब चिंता बा। अउर बहुते कुछ बा एह बातचीत में। भोजपुरी शोध पत्रिका के रूप में एकर विकास तबे हो पाई, जब एह में आलोचनात्मक आलेख छपी। एह पत्रिका खातिर रामरक्षा जी के हार्दिक बधाई आ धन्यवाद।

डॉ. बलभद्र, गिरिडीह (झारखंड)।

'सँझवत' पत्रिका मिलल। आभार। पत्रिका के कुल्हि सामग्रियन के आद्योपांत पढ़ि गइलीं। पत्रिका नाव आ कलेवर से स्पष्ट संदेश देतिया कि ई भोजपुरिया परंपरा, संस्कृति आ आपन भाषाई मौलिकता के संगोरत आधुनिकता आ प्रगतिशीलता का साथे आगा बढ़त रही। ईहे संकेत पत्रिका में संकलित रचनन आ संपादकीय से भी मिलता। संक्षिप्त समीक्षा का साथे प्रकाशित पुस्तकन के विशेष जगह दिहल भी सराहनीय बा। जहाँ ले हमार विचार के सवाल बा त हमार सुझाव बा कि पत्रिका के कद-काया के धेयान में राखि के रचनन के आकार सुनिश्चित कइल नीक रहित। एह से रचनन के विविधता आ संख्या में बढ़ोत्तरी होई। दोसर ई कि रचनन के साथ रचनाकारन के मोबाइल नम्बर भी देवे के चाहीं। पत्रिका-प्रकाशन खातिर हमार हार्दिक बधाई आ शुभकामना।

सतीश प्रसाद सिन्हा, पटना

शेष प्रतिक्रिया पेज नं. 60 पर।

भादो के दू गो सांस्कृतिक परब- बहुरा आ तीज

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

भोजपुरिया जहाँ अपना वीरता, बहादुरी, देशभक्ति, मानवता आ कर्मठता खातिर विशेष रूप से जानल जाले, ओहिजे त्याग, बलिदान, सच्चाई आ ईमानदारी खातिर भोजपुरिया मेहरारू का सङहीं गाइयो-बछरू के नाँव हमनीका संस्कृति में दर्ज बा। बहुरा आ तीज जइसन परब ओकरे कहानी कहेलन स। साँच पूछीं त भादो महीना के ई दूनो परब सांस्कृतिक परब हटे। मानवीय मूल्यन का सुरक्षा में इहनी के अहम भूमिका बाटे।

सत्य आ धर्म का पालन के ब्रत- 'बहुरा'

भादो महीना के अन्हरिया के चौथ के बहुरा कहल जाला। कहीं-कहीं एकरा के गाइ माई के पूजा के परब मानल जाला। गाइ आपन दूध पियाके आदिमी के पालेले आ पोसेले, हमनियो के कृतज्ञ होके गाइ के सम्मान करेके चाहीं, पूजेके चाहीं। ओइसे, हम एकरा के सत्य अउर धर्म का पालन के ब्रत मानींले। एह अवसर पर गाइ आ बाघ के माटी के मूर्ति बनाकर पूजन करे के विधान प्रचलित बा।

एह दिन माई-बहिन अपना संतान के रक्षा खातिर ब्रत राखेलिन। कहीं -कहीं कुँआर लइकी ई ब्रत करेली सन। अइसन साइत एहसे कि माई का सत्य ब्रत में अपना जान के मोह ना राखेवाला बछरुओ बाघ का सोझा गइल रहे। एह दिन ब्रती पूरा दिन उपासे रहेलिन।

एह दिन खास करके गाइ का दूध पर खाली बछरू के अधिकार मानल जाला। एही से गाइ का दूध से बनल कवनो चीज एह दिन ना खाएके चाहीं। आज उपासे रहिके गाइ, बछरू आ बाघ के माटी के मूर्ति बनाके पूजा कइल जाला। एह ब्रत में बाघ बनिके गाइ के परीक्षा लेबेवाला भगवान कृष्ण के कथा सुनल जाला। बहुरा का दिन गऽहूँ आ चाउर से बनल चीज ना खाइल जाला। हमनी किहाँ जौ के सातू (सतुआ) के भोग लगावल जाला आ बाद में ऊहे गुर (गुड़) का सङे खाके पारन कइल जाला।

'बहुरा' (चउथि) ब्रत के कथा

कहल जाला कि कवनो ब्राह्मण का घर में एगो गाइ रहे। गइया के एगो बछरू रहे। गइया के जब साँझि खा घरे लवटे में देर हो जाए त ओकर

बछरुआ बेआकुल हो जात रहे। एक दिन गइया घास चरत-चरत अपना झुंड से बिछुड़ गइलि आ जंगल में बहुत दूर निकल गइलि। अचानक ओकरा सोझा एगो खूँखार बाघ आ गइल। बघवा गइया प झपट्टा मरलसि। तब गइया ओकरासे विनती करे लागलि। कहलसि कि ओकर बछरुआ भोरहीं से ओकर राह ताकत होई। हम ओकराके दूध पियाके लवटि आइबि, तब रउँआ हमराके खाके आपन भूखि मेटा लेबि। बघवा के गाइ प विश्वास ना रहे कि ऊ लवटिके आई। तब गइया सत्य आ धर्म के किरिया खइलसि आ बाघ राजा के लवटिके आवेके विश्वास दियवलसि। बघवा ओकराके अपना बछरू जरे जाए दिहलसि। गइया तेजी में घर पहुँलि, अपना बछरू के जल्दी में दूध पियवलसि आ खूबे चुमलसि-चटलसि। बछरुआ माई के सहमल-सहमल आ चिंतित रूप के भाँप गइल रहे। ओकरा ढेर हठ कइला पर गइया ओकराके सभ बता दिहलसि। ओकरा बाद आपन बचन पूरा करे खातिर बाघ राजा का सोझा गइया अकेले ना गइलि, बछरुओ साथे रहे। बघवा ई देखिके बहुते हैरान भइल। ऊ गाइ के बचन का सोझा आपन माथा नववलसि आउर खुशी-खुशी गाइ के अपना घर जाए दिहलसि। कहल जाला कि बाघ का रूप में भगवान श्रीकृष्ण गइया का सत्य आ धर्म के परीक्षा लेत रहन। तबे से राखे के परंपरा चलल आ रहल बा।

ब्रत के नामकरण

कहीं-कहीं त प्रचलित बा कि ओह गइया के नाँव 'बहुरा' रहे। कहीं-कहीं प्रचलित बा कि ऊ गइया वृंदावन के 'बहुरा' बन में रहत रहे, एही से एह परब के नाँव 'बहुरा' परल। बाकिर हमरा त ई लागेला कि सत्य आ अपना धर्म पर रहला का कारन गाइ के दिन बहुरल (फेरु से लवटल), एही से एह परब के नाँव 'बहुरा' परल।

तीज : अखंड सोहाग के ब्रत

शास्त्रन में तीज के हरितालिका नाम से जानल जाला। **"हरितालिका"** शब्द भी एह ब्रत खातिर खूब प्रचलित बा। भादो का अँजोर में तृतीया तिथि[1] के एकर अनुष्ठान कइल जाला। **पति खातिर 'तीज' आ बेटा खातिर 'जिउतिया'** से बड़ ब्रत ना मानेलिन मेहरारू लोग। ई मान्यता बा कि अखंड सौभाग्य खातिर स्त्री लोग एह ब्रत के करेलिन। अइसन मानल जाला कि एह ब्रत के सबसे पहिले पार्बतीजी भगवान शिव के अपना पति का रूप में प्राप्त करे खातिर कइले रहीं। तबे से एह ब्रत के प्रचलन शुरू हो गइल। कहीं-कहीं एह ब्रत के कुँआर लइकिओ करेली सन जेहसे उहनी के मन लाएक पति मिल सके, बाकिर अइसन बहुत कमे सुने के

मिलेला।

ब्रत के नामकरण आ बिधान

एह ब्रत के नामकरण के कारण "हरितालिका ब्रतकथा"[2] में एह प्रकार बतलावल गइल बा – "अलिभिर्हरिता यस्मात्तस्मात्साहरितालिका"[3]। माने भगवान शिवजी पार्वती जी से कहतानी कि तोहरा के दुखी देखि के तोहार सखी सभ तोहराके जंगल में हर ले गइल रही सन, एही से एह ब्रत के नाम हरितालिका परल। तीज के ब्रत निर्जला आ निराहार रहिके कइल जाला। रात में शिव-पार्बती जी के पूजन कइल जाला। कई गो स्त्री मिलिके एक साथ पूजन करेली आ रात्रि-जागरण करेली। दोसरा दिन अन्न-जल से पारन कइल जाला। एह दिन गोझिया, अनरसा का साथ-साथ तरह-तरह के पकवान आ मिठाइओ चढ़ावल जाला। तीज से एक दिन पहिले के सँझवत के नहा -खा होला, जब नहा-धोके नीमन से शुद्ध भइला का बादे बिना प्याज-लहसुन के बिल्कुल शाकाहारी सात्विक खाना खाइल जाला।

तीज के कथा

पौराणिक मान्यता का अनुसार देवी पार्वतीजी भगवान शिवजी के अपना वर का रूप में प्राप्त करे खातिर तीज के ब्रत कइले रहली। महाराज हिमालय अपना बेटी पार्वती के बियाह सप्तर्षि लोग देले रहन। ई जानकारी मिलला प पार्वतीजी बहुत दुखी भइली काहें कि ऊ शिवजी के अभिन्न अंग हई, आदिशक्ति हई, नित्य शिवसंगिनी हई, संहारक देव शिव के संहारिका शक्ति आउर ऐश्वर्यशालिनी हई आ सबसे बड़ बात कि शिवजी से प्रेम करत रही। उनका सखियन से उनकर दुख बर्दाश्त ना भइल त ऊ पार्वतीजी के जंगल में भगा ले गइली सन, जहाँ ऊ खूब तपस्या कइली। ओ जंगल में नदी किनारे बालू के एगो शिवलिंग बनाके जंगली फूल, बिल्वपत्र आदि से पूजा कइली। ऊ रात-दिन भूखे-प्यासे रहिके जंगल में शिवलिंग के सामने शिवजी के ध्यान करत बहुत दिन गुजार दिहली। उनका अटूट भक्ति से खुश होके एक दिन शिवजी उहाँके इच्छा पूरा होखे के बरदान दिहलीं। जब पार्वतीजी भगवान शिवजी के अर्धांगिनी भइलीं त उहाँसे प्रार्थना कइलीं कि कवनो अइसन ब्रत बताईं जवना से मनुष्य के सभ मनोकामना पूरा होखे। तब भगवान शिवजी उहाँके तीज के पावन ब्रत बतवलीं, जवना से पार्बतीजी भगवान शिवजी के प्राप्त कइले रहीं।

संदर्भ :

1.तीज ब्रत खातिर शास्त्रोक्त तिथि निर्णय- भाद्रशुक्लतृतीयायां हरितालिकाब्रतम्। तत्र परा ग्राह्या। मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने

गौरीव्रतंपरे।
“चतुर्थीसहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा। अवैध्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।”
“भाद्रे मासि सिते पक्षे तृतीया-हस्तसंयुते।”
2.शिव पुराण में वर्णित उमा-महेश्वर प्रसंग का अंतर्गत उमा (पार्वती) के अनेक बरिस ले कठिन तपस्या के बरनन मिलेला।
3.यस्मात् कारणात् (नारद-हिमालय संवादे प्रातिकूल्यत्वात् शिवस्य स्थाने विष्णुना सह विवाह) तस्मात् (अनुकूलतां प्राप्यर्थम् पार्वती-शिवविवाहपरिणामरूपनिर्णयात् नित्यसम्बन्धत्वात्।
व्रती का संदर्भ में-
यस्मात्– उभया सह महेश्वर: सानुकूलं भवेत् ।
तस्मात्– स्त्रिय: सर्वप्रयत्नेन सदा व्रतं कुर्यु:।

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...... के शेष भाग

प्रिय डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी,

हमके ‘सँझवत’ के प्रवेशांक मिलल। मन गदगद हो गइल। एह उद्यम खातिर रउरा के बहुत-बहुत बधाई। पिछला कुछ दशक से भोजपुरी के फइलाव ढेर भइल बा। अब भोजपुरी आ भोजपुरिया लोग केहू के मोहताज नइखे। आज भोजपुरी के कवनो सीमित दायरा नइखे। एकर विस्तार देश-विदेश में चारू ओर हो रहल बा।

भोजपुरी के सेवा में आज के समय में ढेर लोग लागल बा। वर्तमान समय में हर उम्र वर्ग के सेवक अपना-अपना तरीका से भोजपुरी के सेवा कर रहल बाड़े। डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के संपादन में निकलत ‘सँझवत’ पत्रिका ओही सेवा के रास्ता ह।

‘सँझवत’ के प्रवेशांक हमके मिलल। छोट कलेवर में एगो गंभीर पत्रिका पा के मन गदगद हो गइल। एह पत्रिका में हर रंग के रचना बा। भोजपुरी समाज के एह पत्रिका के स्वागत करे के चाहीं कि एकर बढ़ंती होखे।

प्रकाशक आ संपादक मंडल के बधाई आ हार्दिक शुभकामना।

राउर

अजीत दुबे

राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन / अध्यक्ष, भोजपुरी समाज, दिल्ली / सदस्य, जनरल काउंसिल, साहित्य अकादमी / पूर्व अध्यक्ष, मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार।

धरोहर

मनोरंजन प्रसाद सिंह

अपने के जन्म 10 अक्टूबर, 1900 में सूर्यपुरा (शाहाबाद) में भइल रहे। बाद में इहाँके परिवार डुमराँव में आके बसि गइल। इहाँके 'फिरंगिया' कविता असहयोग आंदोलन वाला युग में जन-जन का जुबान पर रहे।

भाषायी विवाद से जूझत भोजपुरी खातिर इहाँके ***मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा*** *कविता प्रासंगिक बिया।*

दोहा

जय भारत जय भारती, जय हिंदी, जय हिंद।
जय हमार भाषा विमल, जय गुरु, जय गोबिंद॥

चौपाई

ई हमार ह आपन बोली। सुनि केहू जनि करे ठिठोली॥
जे जे भाव हृदय के भावे। ऊहे उतरि कलम पर आवे॥
कबो संसकृत कबहूँ हिंदी। भोजपुरी माथा के बिंदी॥
भोजपुरी हमार ह भाषा। जइसे हो जीवन के स्वाँसा॥
जब हम ए दुनिया में अइलीं। जब हम ई मानुष तन पइलीं॥
तबसे जमल रहल जे टोली। से बोले भोजपुरिया बोली॥
हमहूँ ओही में तोतरइलीं। रोवलीं हँसलीं बात बनइलीं॥
खेले लगलीं घुघुआमाना। उपजल धाना पवलीं खाना॥
चंदा मामा आरे अइले। चंदा मामा पारे अइले॥
लेले अइले सोन कटोरी। दूध भात ओकरा में घोरीं॥

दोहा

बबुआ के मुँह में घुटुक, गइल दूध ओ भात।
ओकरा पहिले कान में, पड़ल मधुर मृदु बात॥

चौपाई

पढ़ुआ-लिखुआ करिहें माफ। हम त बात कहींले साफ॥
हमरा ना केहू से बैर। ना खींचब केहू के पैर॥
हम त सबके करब भलाई। जेतना हमरा से बन पाई॥
हिंदी ह भारत के भाषा। ऊहे एक राष्ट्र के आसा॥
हम ओकरो भंडार बढ़ाइब। ओहू में बोलब ओ गाइब॥
तबो न छोड़ब आपन बोली। चाहें केहू मारे गोली॥
जे मगही तिरहुतिया भाई। उनहूँ से हम कहब बुझाई॥
ऊहो बोलस आपन बोली। भरे निरंतर उनको झोली॥

दोहा

हम चाहीं सबके भला,जन-जन के कल्यान।
जन में बसे जनारदन, भगवा में भगवान॥

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...... के शेष भाग

पत्रिका पढलीं, नीमन लागल। बहुते बढिया बा। सँझवत में जवन आत्मीयता के छुवन बा, ऊ परभाती आ बिहाने में ना रहित। इहे संपादक के सूई नीयर निहारे वाला अर्थबोधी आँख होला। नान्हे के बिरवा सेआन भइल एतना, फूल एक फूले पिरितिया के अंगना। राउर नेह बा त ई वटवृक्ष होई। कूल्हि रचना नीमन बाड़ी स। बाकिर, जइसे भोजन में तुलसी दल पड़ जाला त ऊ प्रसाद हो जाला, डॉ. नंदकिशोर जी के उपस्थिति अइसने बा। उहाँके भोजपुरिया भोलानाथ तिवारी हईं। साक्षात्कार नाना पुराण निगमागम से भरल बा। क्वचिदन्य के बेवहारे प्रयोगशीलता ह। पत्रिका के बहुमानता मिलो, ईहे मंगल भाव बा।

डॉ. आनंद मोहन उपाध्याय, कोलकाता।

भोजपुरी पत्रिका 'सँझवत' के तेवर चउथे पन्ना में लउकि गइल बा, जहाँ ई स्पष्ट हो गइल बा कि पत्रिका स्वस्थ आलोचना अउरी पढ़वइया के एगो सजग विचार के आकांक्षी ह। "कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे के चाहीं" में डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी कहले हईं कि आलोचक साहित्य के पाया ह। ओकरा अभाव में सब लेखक मनमाना लिखि के छप-छपा के बिना बनवले बादसाह हो जाला, बेलकुल स्वयंभू बादसाह। बात त सइ टका सही ह। रचना कइला के साथे ओकरा प खुलि के, बिना भाई-भतीजावाद के चरचा होखे के चाहीं। रचना के उमिरि आलोचना से बढ़ेला- तिवारी जी के कहल ईहो बात एगो लकीरिए ह बाकिर आलोचना आलोचना जइसन रहे तब नू। "बसंत में जयदेव के राधा-माधव" लेखनी बेलकुल मोहनी हो गइल बिया, उहो गियान के साथे, जइसे नाव में बेलकुल शांत धीरे-धीरे राधा-माधव के साथ बहत जात होखे पाठक। गीत अउरी गजल त जइसे छन्नी से छानल लागल, जवना में दरसने दरसन बा, कम बा, नीमन बा, कुछ अउर के पियास बाँचल रह गइल। लघुकथा 'बहस' कुछ कमजोर जान पड़ल। एक्के साथ एतना किताबिन पर बात, किताबिन पर खुलि के बहस पर बिराम जइसन ह। प्रयास बहुते नीमन बा अउर ई उम्मीदो कि पत्रिका पाठक के दिल मधे जगह बनावे में कामयाब भी होई। आवरण पत्रिका के श्रृंगार बढ़ा दिहले बा। बहुत-बहुत बधाई।

पंकज तिवारी, नई दिल्ली।

शेष पेज नं. 58 पर।

लघुकथा

सोना के गहना

अंकुश्री

मोहन बाबू से बिआह क के सुन्दरी भोरे-भोर आइल रहस। उनका अइला पर पूरा परिवार बहुत खुश भइल। मोहन बाबू के पहिलकी मेहरारू के मुअला के बाद घर में जे मउअत छाइल रहे, देखते-देखते ऊ बिला गइल। हँसी-खुशी में दिन कइसे बीत गइल, ई बुझइबे ना कइल। दिन भर के थाकल-माँदल रात भइला पर लोग घोड़ा बेच के सूत रहल, बाकिर सुन्दरी के आँखि में नीन ना रहे। जब सभे सूत गइल त ऊ गते से घर से भाग गइली। अपना साथे ऊ सोना के चार सेट गहना आ पाँच लाख नगद रुपियो ले गइली।

बिआह के लगन बहुत जोर पकड़ले रहे। ऊ एक सेट गहना आउर एक लाख रुपिया के चार गो छोट-छोट मोटरी बनवली आ पूछत-आछत चार अइसन गरीब परिवार में गइली, जहँवा बेटी के बिआह होखे वाला रहे। चारों परिवार में एकहग के मोटरी दे के ऊ निकल गइली। मोहन बाबू के घरे कुहराम मचल रहे। मेहरारू छव महीना पहिलहीं मरल रहस। बेटा श्रवण आउर बेटी श्रेया के साथ बइठ के ऊ मथपच्ची करत रहस। का करस, केकरा से कहस, कुछ बुझात ना रहे। थानो में जाये में ना बनत रहे। नइकी मेहरारू के ना नाँव-पता रहे, ना फोटो। ऊ सिकायतो करतन त केकरा बिरोध में ? सुन्दरी उनकर नाम ना रहे। सुन्दर लगली त ऊ उनका के सुन्दरी कह देले रहस।

दिल्ली से मोहन बाबू रेलगाड़ी में आवत रहस कि सुन्दरी से उनकर भेंट भ गइल। आकर्षक-सुन्दर चेहरा, बातचीत में निपुण। अगल-बगल स्लीपर रहे, सुतल -बइठल भर रस्ता दूनो बतिआवत आइल रहस। बात अतना गहराइल कि रेलगाड़ी से उतरला के बाद बहरा मंदिर में गइलन आ भगवान के साक्षी मान दूनो बिआह कर लेले रहस। राह चलते मिलल मेहरारू के ऊ खोजस त कहाँ आउर केहू से कहस त का ?

''बाबूजी, हई देखीं। नइकी माई के फोटो ह।'' चार दिन पहिले भागल सुन्दरी के फोटो फेसबुक पर देखावत मोहन बाबू से श्रेया कहली। कवनो शादी के फोटो रहे। सभे केहू मण्डप के ओर मुँह कइले रहे आ सुन्दरी बाहर जात लउकत रहली।

फेसबुक पर कहीं से शेयर होत-हवात आइल रहे। ओपर लिखल रहे, ''एगो अइसन महिला, जेकर बिआह गहना के अभाव में ना हो पाइल, अब गरीब लइकिअन के बिआह में सोना के गहना आ रुपेया बाँटत बाड़ी।''

भोजपुरी त्रैमासिकी 'सँझवत ' के प्रवेशांक (अप्रैल-जून, 2019) का लोकार्पण पटना में 28.5.2019 को सम्पन्न

पटना। वरिष्ठ साहित्यकार और भोजपुरी के गालिब कहे जाने वाले जगन्नाथ के आवास पर भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध की भोजपुरी त्रैमासिकी 'सँझवत' के प्रवेशांक (अप्रैल-जून, 2019) का लोकार्पण-कार्य संपन्न हुआ।

पत्रिका का विमोचन करते हुए जगन्नाथ ने कहा कि यह पत्रिका भोजपुरी भाषा और साहित्य को समझने में उपयोगी होगी। उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि डॉ. विमल के संपादन में यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित होती रहेगी और स्तरीयता से कभी समझौता नहीं करेगी। अपने उद्बोधन के दौरान श्री जगन्नाथ ने भावुक होते हुए इस विषय पर चिंता भी व्यक्त की कि वर्तमान पीढ़ी में लेखकों की संख्या अत्यल्प है। नई पीढ़ी के लेखकों को भोजपुरी में लेखन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए और विभिन्न विषयों और विधाओं में उनसे लिखवाया जाना चाहिए।

मौके पर हिंदी और भोजपुरी के प्रख्यात साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी और प्रधान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के साथ ही अन्य साहित्यप्रेमी भी मौजूद थे। भोजपुरी और हिंदी साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी ने 'सँझवत' के आकर्षक आवरण पृष्ठ की जमकर प्रशंसा करते हुए उसमें प्रकाशित सामग्री की स्तरीयता और उपादेयता पर प्रसन्नता व्यक्त की। श्री द्विवेदी ने भरपूर खुशी और विश्वास के साथ कहा कि डॉ. विमल के संपादन में यह पत्रिका निस्संदेह भोजपुरी भाषा के मानकत्व तथा साहित्य को एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान करेगी।

उन्होंने कहा कि विभिन्न गद्य विधाओं के लिए विषय देकर और काव्य के क्षेत्र में विशिष्ट छंदों में लेखन कराकर नई पीढ़ी की ऊर्जा को भोजपुरी लेखन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। संपादक नए लेखकों को यह भरोसा दिला पाएँ कि उनकी रचनाओं को संशोधित कर बेहतर रूप दिया जा सकता है तो वे युवा रचनाकारों की एक अच्छी टीम तैयार कर सकते हैं।

पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल ने 'सँझवत' में प्रकाशित सामग्री का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह प्रवेशांक वास्तव में पत्रिका का अनंतिम रूप नहीं है, वरन् मूल्यवान सुझावों के आलोक में अगले कुछ अंकों के बाद ही इसके रूप की सुनिश्चितता स्पष्ट हो पाएगी।

उन्होंने विश्वास दिलाया कि वे नई पीढ़ी के रचनाकारों की टीम तैयार करने और उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए जितना भी संभव हो पाएगा, प्रयत्न करते रहेंगे। वे जहाँ 'सँझवत' को मुख्य रूप से शोध और समीक्षा की पत्रिका के रूप में स्थापित करना चाहते हैं, वहीं साहित्य की हर विधा में लेखन हेतु उसे एक मानक और प्रेरक मंच भी बनाना चाहते हैं।

(ऑनलाइन साहित्यिक-सांस्कृतिक रिपोर्टिंग खातिर प्रख्यात 'बेजोड़ इंडिया' द्वारा प्रकाशित 'सँझवत' के प्रवेशांक का विमोचन के रिपोर्ट)

'सँझवत' के प्रवेशांक का विमोचन के फोटो आ रिपोर्ट के कतरन

संझवत पत्रिका का हुआ विमोचन

जासं, पटना : वरिष्ठ साहित्यकार और भोजपुरी के गालिब कहे जाने वाले लेखक जगन्नाथ के आवास पर भोजपुरी त्रैमासिक पत्रिका 'संझवत' का विमोचन किया गया। पत्रिका के विमोचन पर लेखक जगन्नाथ ने कहा कि यह पत्रिका भोजपुरी साहित्य और भाषा को समझने में उपयोगी होगी। मौके पर हिंदी और भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी, प्रधान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के साथ अन्य साहित्यकार मौजूद थे।

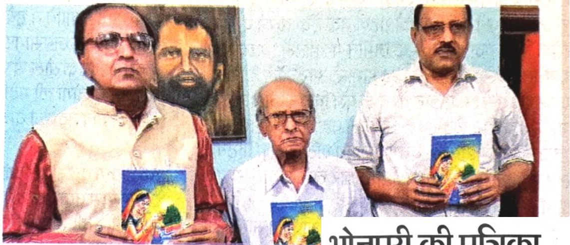

पत्रिका का लोकार्पण करते हुए साहित्यकार।

सँझवत का लोकार्पण

आरा। वरिष्ठ साहित्यकार और भोजपुरी के गालिब जगन्नाथ जी के आवास (पटना) पर अनौपचारिक परिवेश में श्री जगन्नाथ के कर-कमलों से भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध की भोजपुरी त्रैमासिकी 'सँझवत' के प्रवेशांक (जुलाई-सितंबर, 2019) लोकार्पण किया गया।

लोकार्पण करते साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी, श्री जगन्नाथ और प्रधान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल।

बिहार के दैनिक जागरण, सहारा आउर प्रभात खबर में प्रकाशित रिपोर्ट।

भोजपुरी की पत्रिका संझवत का लोकार्पण

संस्कृति, संवेदना और शोध की वाहक है

सिटी रिपोर्टर|पटना

वरिष्ठ साहित्यकार जगन्नाथ ने भोजपुरी पत्रिका 'संझवत' का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा-यह त्रैमासिक पत्रिका भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध की वाहक होगी। लोकार्पण समारोह के दौरान साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी, पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल आदि मौजूद थे।

भोजपुरी गौरव अर्जुन कुमार चौधरी

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

जन्म : 4 फरवरी, 1970 के समस्तीपुर (बिहार) में।
शिक्षा : स्नातक
उपलब्धि : देश-विदेश में संगीत आ खास कर नाल वादन का क्षेत्र में विशेष उपलब्धि पर अनेक सम्मान आ पुरस्कार।

रिद्म ऑफ बिहार का प्रयोग से विशेष रूप से चर्चित नालवादक अर्जुन कुमार चौधरी के नाँव बिहार में बहुत शान से लीहल जाला। देश का विभिन्न भागन में इहाँ का द्वारा संयोजित-निर्देशित तबला, नाल, बाँसुरी, मांदर, सितार आ नगाड़ा का सङे मृदंगम के सांगीतिक समन्वयन के प्रदर्शन त भइले बा, भारतीय संसदो में देश भर के सांसद रिद्म ऑफ बिहार के सुनले आ जमिके सरहले।

इहाँके जन्म भलहीं मिथिलांचल में भइल होखे आ मातृभाषा मैथिली होखे बाकिर इहाँका अधिकतर लउकींले भोजपुरिये कार्यक्रम में। ओइसे त इहाँका भोजपुरी के अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचन पर भोजपुरी संगीत आ खास कर नाल वादन खातिर सम्मानित हो चुकल बानी बाकिर बिहार के कवनो बड़हन भा महत्त्वपूर्ण संगीत के कार्यक्रम बिना इहाँके उपस्थिति के खटकेला।

बिहार कलारत्न चौधरी जी वास्तव में बिहार के गौरव बानी। इहाँका ऑल इंडिया रेडियो के बी हाई ग्रेड के नालवादक हईं बाकिर सहज एतना कि नया से नया कलाकारो के साथ बजावे से परहेज ना करीं। भोजपुरी संगीत खातिर समर्पित श्री चौधरी एह बात से बहुत दुखी लगलीं कि जवन भोजपुरी अपना मूल रूप में अतना मधुर आ शालीन बिया, भोजपुरी फिल्मन में ओकर रूप अतना बिगाड़ि के काहें प्रदर्शित कइल जाला। भोजपुरी के बढ़िया लेखकन से काहें परहेज करेला लोग ? आजु गायन में दस्तक देत फुहरकम का मूल में भी इहाँका स्तरीय साहित्यकारन के अनदेखा कइला के एगो बड़हन कारन मानींले।